व्याकरण सुरभि

हिंदी व्याकरण

६ एवं ८

पाठ–1 भाषा, लिपि और व्याकरण

(Page No - 5)

बताओ–

1. मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहने के लिए एसे अपने विचारों और भावों का परस्पर आदान–प्रदान करना पड़ता है। अतः भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से मनुष्य अपने विचारों व भावों को परस्पर बोलकर या लिखकर प्रकट करता है।
2. भाषा के दो रूप हैं– मौखिक भाषा और लिखित भाषा
   दूरदर्शन, रेड़िया, टेलिफोन आदि ये भाषा के मौखिक रूप हैं। इनमें मनुष्य अपने भाषा को बोलकर व सुनकर व्यक्त करता हैं परंतु समाचार पत्र, पत्र आदि की भाषा लिखित है। मौखिक भाषा का मूल रूप मौखिक हैं जबकि लिखित भाषा बाद में विकसित हुई।
3. मौखिक ध्वनियों के लिखित रूप को प्रकट करने के लिए निश्चित किए गए चिह् नों को लिपि कहा जाता है। प्रत्येक भाषा की लिपि रोमन हैं तथा हिंदी संस्कृत आदि की लिपि देवनागरी है।
4. भाषा को शुद्ध रूप से पढ़ने तथा लिखने के लिए हमें व्याकरण की आवश्यकता होती हैं क्योंकि व्याकरण ही वह शास्त्र हैं जो हमें भाषा के शुद्ध–अशुद्ध रूप की पहचान करता है।

लिखो–

1. (क) (7)　　(ख) (3)　　(ग) (3)　　(घ) (3)
2. (क) लिखित भाषाा　　(ख) हिंदी　　(ग) रोमन　　(घ) गुरुमुखी

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (क)　　2. (ख)　　3. (क)　　4. (घ)　　5. (ग)

पाठ–2 वर्ण व्यवस्था

(Page No - 14)

बताओ–

1. किसी भी भाषा को सीखने के लिए उसके ध्वनि समूह को सीखना पड़ता हैं ये ध्वनिया ही वर्ण या उक्षर कहलाती है। वर्ण भाषा को सबसे छोटी इकाई होती हैं तथा इसके और खण्ड नही किए जा सकें। अर्थात् भाषा की सबसे छोटी इकाई या ध्वन जिसके और टुकड़े न किए जा सकें वर्ण या अक्षर कहलाती है; जैसे– पुस्तक = प् + उ + स् + ह् + उ + क् + अ आदि।
2. वर्णो के व्यवस्थित समूह को वर्णमाला कहते हैं। प्रत्येक भाषा की अपनी वर्णमाला होती है।
3. दो भेद हैं स्वर और व्यंजन
4. स्वर के दों भेद हैं– ह्रस्व स्वर और दीर्घ स्वर

5. स्पर्श व्यंजनों की संख्या 25 है। इन्हें 5 वर्गों में बाँटा गया है:-

कवर्ग – क ख ग घ ङ चवर्ग – च छ ज झ ञ

टवर्ग – ट ठ ड ढ ण तवर्ग– त थ द ध न

पवर्ग – प फ ब भ म

6. अतंस्थ का अर्थ है- स्वर और व्यंजन के बीच में स्थित। इनका उच्चारण जीभ, तालु, दाँत और होठां के निकट आने से होता है, किंतु श्वास में रुकावट कम होती है। ये चार हैं- य, र, ल, व।

7. श, ष, स, और ह

8. क्ष – (क् + ष) – क्षमा; त्र – (त् + र) – त्रिकाल; ज्ञ – (ज् + ञ) – ज्ञान; श्र – (श + र) – श्रम

लिखो–

1. अंत चाँद मंजन साँस डंक ऊँट
2. क्षत्रिय, क्षमा त्रिशुल, त्रिवेद ज्ञानी, ज्ञानेश्वर श्रीमान, श्रेय
3. क् + अ + म् + ल् + ऐ + श् + अ
   च् + अं + द् + र् + अ + म् + आ
   ल् + ओ + क् + अ + प् + आ + ल् + अ
   अँ + म् + ऊ + ठ् + आ
4. दर्द, कर्कश ग्रह, क्रेन ट्रक, ड्रम
5. उच्चतर, बच्चा मक्का, हुक्का बल्ला, छल्ला बप्पा, गप्पा

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (ख) 2. (ग) 3. (घ) 4. (ख) 5. (घ)

पाठ-3 उच्चारण

(Page No - 19)

बताओ–

स्वयं करें।

लिखो–

1. ज्ञान गृहकार्य कवयित्री संयासी विद्यालय वैज्ञानिक
2. (क) शबरी (ख) जाती (ग) बोला-बाला (घ) गडेश (ङ) बार

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (ग) 2. (क) 3. (ख) 4. (ख)

पाठ-4 संधि

(Page No - 21)

बताओ–

1. दो ध्वनियों या वर्णों के मेल से जो परिवर्तन होता है, उसे संधि कहते हैं; जैसे– पुस्तकालय = पुस्तक + आलय; सूर्योदय = सूर्य + उदय आदि।

2. स्वर संधि के पाँच भेद हैं:- दीर्घ संधि, गुण संधि, वृद्धि संधि, यण संधि, अयादि संधि।
3. गुण संधि के उदाहरण – देव + इंद्र = देवंद्र; नर + इंद्र = नरेंद्र
   वृद्धि संधि के उदाहरण – एक + एक = एकैक; सदा + एव = सदैव
   यण संधि के उदाहरण – यदि + अपि = यद्यपि; उपार + उक्त = उपर्युक्त

लिखो–

1. मुनिंद्र पुस्तकालय वधुत्सव सूर्योदय विद्यार्थी सर्वोदय परमेश्वर इत्यादि
2. महेंद्र = महि + इंद्र सूर्यास्त = सूर्य + अस्त
   अत्यधिक = अति + अधिक नदीश = नदि + ईश
   रमेश = रमा + ईश मतैक्य = मत + ऐक्य
   परमेश्वर = परम + ईश्वर दीपावली = दीप + आवली
3. गुणसंधि वृद्धि संधि दीर्घ संधि वृद्धि संधि दीर्घ संधि

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (क) 2. (ख) 3. (क) 4. (ग) 5. (क)

पाठ–5 शब्द व्यवस्था

(Page No - 33)

बताओ–

1. वर्णों के सार्थक समूह को शब्द कहते हैं।
2. वर्णों के सार्थक समूह को शब्द कहते हैं परंतु जब शब्द वाक्यों में प्रयुक्त होकर उनके रूप में लिग वचन या कारक के कारण कुछ परिवर्तन आ जाता हैं, तो वे पर कहलाते है।
3. हिंदी भाषा के शब्दों को चार वर्गों में बाँटा गया है– स्रोत/उत्पत्ति के आधार पर, रचना/बनावट के आधार पर, प्रयोग के आधार पर, अर्थ के आधार पर।
4. रचना के आधार पर शब्द के तीन प्रकार हैं– रूढ़, यौगिक और योगरूढ़।
5. जिन शब्दों में संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया तथा विशेषण के कारण विकार आ जाता हैं उन्हें विकारी शब्द कहते हैं परंतु ऐसे शब्द जिनमें इनके कारण विकार नहीं आता उसे अविकारी शब्द कहते हैं।

लिखो–

1. तत्सम शब्द – अग्नि, दुग्ध तद्भव शब्द – आग, दूध
   यौगिक शब्द – जन्मदिन, पुस्तकालय योगरूढ़ शब्द – हिमालय, पीतांबर
   विदेशी शब्द – टेलीफोन, आइसक्रीम देशज शब्द – लोटा, किवाड़
2. तत्सम शब्द – अग्नि, ग्रह तद्भव शब्द – सूरज, साँप, काम, किताब
   देशज शब्द – डिबिया, चारपाई, झोला विदेशी शब्द – लोटा, स्टेशन, डॉक्टर
3. काष्ठ – तिनका कंटक – काँटे सूत – (सूत्र का तद्भव रूप सूत है।)
   पुष्प – फूल आम्र – आम क्षेत्र – खेत
   रात्रि – रात निंद्रा – नींद

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (ख) 2. (घ) 3. (क) 4. (ग) 5. (ख)

पाठ–6 शब्द निर्माण : उपसर्ग – प्रत्यय

(Page No - 38)

बताओ–

1. उपसर्ग शब्द से पहले लगते हैं। उपसर्ग चार प्रकार के होते हैं– संस्कृत के तथा हिंदी के अरबी–फ़ारसी के तथा अंग्रेज़ी के।
2. प्रत्यय शब्द के बाद लगते हैं। प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं– कृत् प्रत्यय और तद्धित प्रत्यय।

लिखो–

1.

	मूल शब्द	**उपसर्ग**
निर्गुण	गुण	निः
अवगुण	गुण	अव
अपमान	मान	अप
दुर्भावना	भावना	दुः
कुरुप	रुप	कु
दुष्प्रभाव	प्रभाव	दुः

2. दूर – अ + दूर = अदूर　　पूत – स + पूत = सपूत
   बल – दु + बल = दूबला　　राह – सौ + राह = सौराह
3. अतिक्रमण, अविशाय　　आरंम्भ, आक्रमण　　उपकर्म, उपपाच्य
   अपकर्ष, अपमान　　अवगुण, अवहेलना
4.

	मूल शब्द	**प्रत्यय**
लेनदार	लेन	दार
लिखाई	लिख	आई
कृपालु	कृपा	आलु
धार्मिक	धर्म	ईक
सुंदरता	सुंदर	ता

5. पर्वतारोही　पढ़ाकू　इतिहासकार　बिकाऊ　मूलचंद　तरोताजा
6. पढ़ता　इकलौती　महत्व　लिखावट　ओढ़नी　पागलपन

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (ग)　2. (ग)　3. (घ)　4. (ग)

पाठ–7 समास

(Page No - 46)

बताओ–

1. 'समास' शब्द का अर्थ है– छोटा करना अर्थात् दो या दो से अधिक शब्दों को मिलाकर एक संक्षिप्त शब्द बना देने का समास कहते हैं। इसमें शब्द–समूह के सक्षिप्त रूप को समस्त पद या 'सामासिक शब्द' कहा जाता है। समास से भाषा में सक्षिप्तता, शैली में उत्कृष्टता एवं सटीकता आ जाती है।

2. समास के छ: भेद हैं:– 1. अव्ययीभाव समास 2. तत्पुरूष समास 3. द्विगु समास 4. द्वंद्व समास 5. कर्मधारय समास 6. बहुव्रीहि समास

लिखो–

1. सेनापति	सेना का पति	तत्पुरुष समास
दशानन	दस है आनन जिसके (रावण)	बहुव्रीह समास
आजन्म	जन्म से लेकर	अव्ययीभाव समास
चतुर्भुज	चार भुजाओं का समूह	द्विगु समास
भरपेट	पेट भर के	अव्ययीभाव समास
पाप–पुण्य	पाप और पुण्य	द्वद्वं समास
दाल–रोटी	दाल और रोटी	द्वद्वं समास
त्रिलोक	तीन लोको का समूह	द्विगु समाम

2. 1. विद्यालय	– तत्पुरुष समास	2. पंचवटी	– द्विगु समास
3. भाई–बहन	– द्वद्वं समास	4. रातों–रात	– अव्ययीभाव समास
5. लंबोदर	– बहुव्रीह समास	6. वनवास	– तत्पुरुष समास
7. नीलगाय	– कर्मधारय समास	8. मार्गव्यय	– तत्पुरुष समास
9. राधा–कृष्ण	– द्वद्वं समास	10. जन्मभर	– द्वद्वं समास

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (क) 2. (ख) 3. (घ) 4. (क)

पाठ–8 शब्द–भंडार

(Page No - 52)

लिखो–

1. अनिल, पावक अभिलाषा, अकांक्षा शशि, राकेश
   दिवस, वार पाषाण, पाहर

2. चर – अचर सुगंध – दुर्गंध सभ्य – असभ्य रक्षाक – भक्षक
   सम्मान – अपमान स्वस्थ – अस्वस्थ अमृत – तृत बंधन – मुक्ति
   पाप – पुण्य दोषी – निर्दोष

3. वस्त्र, कपड़ा जल, वारि पैर, औदा वस्त्र, कपड़ा
   पत्ता, चिट्ठी देवता, स्वर

4. अपेक्षा – राम की अपेक्षा श्याम तेज़ दौड़ता है।
   उपेक्षा – मोहन में अपने पिता की उपेक्षा कर अच्छा नहीं किया।
   ओर – लक्ष्मण का घर किस ओर है।
   और – राम और लक्ष्मण दोनों भाई थे।
   दिशा – ये तेज हवाएँ पश्चिम दिशा से चल रही है।
   दशा – मोहन के पिताजी की दशा बहुत खराब है।
   अवलंब – निराश प्राणियों का यही अवलंब है।

अविलंब – खेल के नतीजे अविलंब आ गए है।
कुल – श्री-राम उच्च कुल के जन्मे थे।
कूल – इन दिनों यमुना का फूल सूखा बड़ा है।

5. अनुपम सर्वव्यापी अनुपम आस्तिक अदृश्य उपर्युक्त इच्छुक विदोष

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (क) 2. (घ) 3. (ख) 4. (क) 5. (ख)

पाठ-9 संज्ञा

(Page No - 58)

बताओ–

1. किसी व्यक्ति, प्राणी, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।
2. संज्ञा के मुख्यत: तीन भेद हैं– व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, भाववाचक संज्ञा।
3. जिस शब्द से किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध हो, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे अटल बिहारी वाजपेयी, रामायण, दिल्ली आदि। परंतु जिस संज्ञा पद से किसी वर्ग के सभी प्राणियों, वस्तुओं या स्थानों का बोध हो, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे आदमी, शेर, पुस्तक, आदि।

लिखो–

1. करुणा – भाववाचक संज्ञा
   माला – व्यक्तिवाचक संज्ञा
   कावेरी – व्यक्तिवाचक संज्ञा
   मिठास – भाववाचक संज्ञा
   पुस्तक – व्यक्तिवाचक संज्ञा
   हीरा – व्यक्तिवाचक संज्ञा
   पहाड – जातिवाचक संज्ञा
   कमल – व्यक्तिवाचक संज्ञा
2. व्यक्तिवाचक संज्ञा – रेलगाड़ी, पंजाब, चेन्नई, कार
   जातिवाचक संज्ञा – पंड़ित, मौलनी, थौड़े
   भाववाचक संज्ञा – बुढ़ापा, यौवन
3. चतुर – चतुराई पशु – पशुता ईमानदार – ईमानदारी
   मीठा – मिठास काला – कालिमा भक्त – भक्ती

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (क) 2. (क) 3. (ख) 4. (ग) 5. (ख)

पाठ-10 संज्ञा के विकारे

(Page No - 69)

बताओ–

1. लिंग, वचन, और कारक
2. संज्ञा के जिस रूप से यह पता चले कि वह पुरुष जाति का है अथवा स्त्री जाति का, उसे व्याकरण में लिंग कहते हैं; जेसे– लड़का पढ़ रहा है।, लड़की पढ़ रही है।
   लिंग के दो भेद होते हैं– 1. पुल्लिग 2. स्त्रीलिंग

3. वचन के दो भेद हैं– एकवचन और बहुवचन।
4. किसी वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा का उस वाक्य को किया से जो संबंध होता हैं, उसे कारक कहते हैं। कारक के आठ भेद है– 1. कर्ता कारक 2. कर्म कारक 3. करण कारक 4. संप्रदान कारक 5. अपादान कारक6. संबंध कारक 7. अधिकरण कारक 8. संबोधन कारक
5. किसी कार्य को करने वाला ही कर्ता होता है। प्रत्येक क्रिया का कर्ता अवश्य होता हैं। परंतु वाक्य में जिस संज्ञा/सर्वनाम पर क्रिया का फल पड़े उसे कार्म कारक कहते हैं। कर्ता कारक का परसर्ग 'ने' होता हैं जबकि कर्म कारक का परसर्ग 'को' होता है। जैसे– संजय ने पत्र लिखा। इसमें ने परसर्ग लगने से यह कर्ता कारक है। जबकि मैंने मोहन को पढ़ाया में को परसर्ग आने के कारण ये कर्ता कारक है।
6. जिसकी सहायता से कोई कार्य सपूंर्ण हो उसे करण कारक कहते हैं इसका परसर्ग 'से, के द्वारा' है। जैसे– मैं कलम से चिट्ठी लिखता हूँ। परंतु जिससे अलग होने का भाव प्रकट है। उसे अपादान कारक कहते हैं; जैसे– विकास साइकिल से गिर पड़ा।

लिखो–

1. छात्र	– छात्रा	कवि	– कवयित्री	बकरी	– बकरी
रूपवान	– रूपवती	सेवक	– सेविका	डिब्बा	– डिब्बी
2. नदी	– नदियाँ	मनुष्य	– मनुष्यों	कुरसी	– कुर्सियाँ
अध्यापिका	– अध्यापिका	लड्डू	– लड्डूओं	बहू	– बहुएँ

3.

	लिंग	**वचन**	**कारक**
1.	पुल्लिंग	एकवचन	कर्म कारक
2.	पुल्लिंग	एकवचन	कर्ता कारक
3.	पुल्लिंग	बहुवचन	कर्म कारक
4.	पुल्लिंग	बहुवचन	अपादान कारक
5.	पुल्लिंग	एकवचन	अधिकरण कारक

4. 1. संबंध कारक   2. अधिकरण कारक   3. अपादान कारक
4. अधिकरण कारक   5. संप्रदान कारक

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (क)   2. (ग)   3. (क)   4. (ख)

पाठ–11 सर्वनाम

(Page No - 74)

बताओ–

1. जिन शब्दों का प्रयोग संज्ञा के स्थान पर होता हैं उसे सर्वनाम कहते हैं इसका प्रयोग संज्ञा को स्थान पर किया जाता है।
2. सर्वनाम के कुल छः भेद हैं– पुरुषवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, प्रश्नवाचक, संबंधवाचक और निजवाचक।

लिखो–

1. पुरूषवाचक सर्वनाम – वह, मेरा, उसकी, उसके, उसको, उससे
   प्रश्नवाचक सर्वनाम – कौन
2. 1. निश्चयवाचक सर्वनाम 2. अनिश्चयवाचक सर्वनाम 3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम
   4. निश्चयवाचक सर्वनाम 5. संबंधवाचक सर्वनाम
3. 1. मैं 2. वह 3. कुछ 4. वे

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (ग) 2. (ख) 3. (ग) 4. (क) 5. (क)

पाठ–12 विशेषण

(Page No - 74)

बताओ–

1. जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विर्शषता बताते हैं; उन्हें विशेषण कहते है; जैसे– मैं ठंड़ा पानी पीता हूँ। इस वाक्य में ठंड़ा शब्द पानी की विशेषता बता रहा है।
2. संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते है परंतु ये जिन शब्दों की विशेषता बताते हैं उसे विशेष्य कहते हैं; जैसे– मैं ठंड़ा पानी पीता हूँ। इस वाक्य में पानी की विशेषता बताई गई हैं कि वह ठंड़ा है। इसलिए ठंड़ा विशेषण तथा पानी विशेष्य है।
3. विशेषण के चार भेद होते हैं–
   1. गुणवाचक विशेषण के उदाहरण – अच्छा, बुरा आदि।
   2. संख्यावाचक विशेषण के उदाहरण – चार, छः पाँच आदि।
   3. परिमाणवाचक विशेषण के उदाहरण – दो मीटर कपड़ा, 500 मिली ग्राम
   4. सार्वनामिक विशेषण के उदाहरण – वह, यह

लिखो–

1. (क) धार्मिक (ख) साहित्यिक (ग) ऐतिहासिक (घ) सुंदर
2. (क) गुणवाचक विशेषण (ख) संख्यावाचक विशेषण (ग) परिमाणवाचक विशेषण (घ) सार्वनामिक विशेषण
3. गुणवता दैनिक ऊपरी बाहरी पारिवारिक बुद्धिमान
4. 1. मेरी 2. बहुत 3. बहुत 4. तुम्हें
5.

विशेषण	**विशेष्य**
तिरंग	झंड़ा
सफेद	बिल्ली
चार	लड़के
दो लीटर	दूध

6. 1. बहुत 2. कुछ 3. कुछ 4. ठंड़ा

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (क) 2. (घ) 3. (घ) 4. (ख) 5. (घ)

पाठ–13 क्रिया

(Page No - 86)

बताओ–

1. जिस शब्द से किसी काम के करने या होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं; जैसे– उठना, सोना, पढ़ना आदि।
2. कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद हैं– अकर्मक क्रिया, सकर्मक क्रिया
3. जिन क्रियाओं का कर्ता स्वयं कार्य न करके दूसरे से काम करवाता है, उन्हें प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं; जैसे– मैं नौकर से कपड़े धुलवाता हूँ।
4. संयुक्त क्रिया में दो या दो से अधिक क्रियाएँए होती है।

लिखो–

1. (क) पढ़ना (ख) बैठा (ग) सिलता (घ) गिरता (ङ) पीता
2. (क) अकर्मक (ख) सकर्मक (ग) अकर्मक (घ) सकर्मक (ङ) सकर्मक
3. पढ़वाना धुलवाना खिलवाना तुड़वाना चलवाना पिलवाना
4. (क) एककर्मक (ख) एककर्मक (ग) द्विकर्मक (घ) एककर्मक (ङ) एककर्मक

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (ख) 2. (क) 3. (घ) 4. (क) 5. (घ)

पाठ–14 काल

(Page No - 89)

बताओ–

1. क्रिया के होने या घटने के समय को काल कहते हैं।
2. काल के मुख्य रूप से तीन भेद होते हैं– वर्तमान काल, भूतकाल, भविष्यकाल

लिखो–

1. (क) वर्तमान (ख) भूतकाल (ग) भविष्यकाल (घ) वर्तमान (ङ) भूतकाल
2. (क) पिताजी अखबार पढ़ेगें।
   (ख) हम पेड़ लगा रहे है।
   (ग) उसके पिताजी अध्यापक थे।
   (घ) हम कोलकाता जा रहे है।
3. भारत पर आंतकवादी हमला हो गया। जिसमें तीन आतंकवादी छत्रपति टर्मिनल में घुस आए। उन्होंने अंधाधुंध फायरिंग शुरू कर दी। इस हमते में पंद्रह व्यक्ति मोर गए। दो आतंकवादियों को पकड़ लिया गया।

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (क) 2. (क) 3. (ख) 4. (ख)

पाठ-15 वाच्य

(Page No - 94)

बताओ–

1. उस रूप-रचना को वाच्य कहते हैं जिससे यह पता चले कि क्रिया को मूल रूप से चलाने वाला कर्ता है यह अन्य कोई घटक।
2. वाच्य तीन प्रकार के होते हैं–
   1. कर्तृवाच्य के उदाहरण – रमन सो रहा है।
   2. कर्मवाच्य के उदाहरण – मुझसे चिट्ठी नहीं पढ़ी जाती।
   3. भाववाच्य – यहाँ सोया नहीं जाता।
3. कर्तृवाच्य में क्रिया कर्ता के अनुसार होती है।
4. भाववाच्य केवल अकर्मक क्रिया का रूप होता है।

लिखो–

1. कृर्तवाच्य भाववाच्य कर्मवाच्य कृर्तवाच्य
2. (क) मेरे द्वारा पत्र लिखा जाता है।
   (ख) नेताजी के द्वारा भाषाण दिया गया।
   (ग) हमारे द्वारा कल झंडा फहराया जाएगा।
   (घ) डाकिया द्वारा पत्र बाँटे गए।

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (ख) 2. (क) 3. (ख) 4. (ख)

पाठ-16 अविकारी शब्द

(Page No - 96)

बताओ–

1. जिन शब्दों का रूप नहीं बदलता अर्थात् जिनमें लिंग, वचन, कारक, काल आदि के कारण कोई विकार या परिवर्तन नहीं होता, अतः ये अविकारी शब्द कहलाते है। कुछ शब्दों पर लिंग वचन, कारक, काल आदि के कारण कोई प्रभाव नहीं पड़ता; अतः इन्हें अव्यय कहा जाता है।
2. अविकारी शब्द पाँच प्रकार के होते हैं–
   1. क्रिया-विशेषण के उदाहरण – गीता मंद-मंद मुसकरा रही थी।
   2. संबंधोधक के उदाहरण – मेरे मकान के आगे शिव मंदिर है।
   3. समुच्ययबोधक के उदाहरण – माँ ने कहा कि खाना खा लो।
   4. विस्मायादिबोधक के उदाहरण – अरे! तुम कब आए?
   5. निपात के उदाहरण – कोमल ने मुझे भी बुलाया है।
3. क्रिया-विशेषण के चार भेद हैं:-
   1. रीतिवाचक क्रिया-विशेषण के उदाहरण – घड़ी तेज चल रही है।
   2. कालवाचक क्रिया-विशेषण के उदारहण – राजू दिन भर पढ़ता है।

3. स्थानवाचक क्रिया-विशेषण के उदाहरण – राम ऊपर बैठा है।

4. परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण के उदाहरण – थोड़ा खाओ खूब पचाओ।

4. संबंधबोधक एक-दूसरे के साथ संबंध स्थापित करते हैं।

5. समुच्चयबोधक अव्यय के दो भेद हैं– 1. समानाधिकरण समुच्चयबोधक 2. व्यधिकरण समुच्चयबोधक

6. निपात का प्रयोग किसी बात पर बल देने या गहरा भाव प्रकट करने के लिए किया जाता है।

लिखो–

1. **क्रिया-विशेषण** **भेद**

	क्रिया-विशेषण	भेद
1.	तेज़	रीतिवाचक
2.	ऊपर	स्थानवाचक
3.	परसो	कालवाचक
4.	खाया	परिमाणवाचक

2. के कारण – बारिश होने के कारण मैं घर देर से पहुँचा।
   के सहित – राम के सहित सीता चली।
   के पीछे – मेरे घर के पीछे आम का बागीचा है।
   के पश्चात – खाना खाने के पश्चात् टहलना चाहिए।

3. ताकि – तुम जल्दी से अपना काम कर लो ताकि हम घूमने जा सकें।
   परंतु – शीला बाज़ार सामान लेने गई परंतु अपना पर्स घर पर भूल गई।
   क्योंकि – घर जल्दी चलो क्योंकि बारिश आने वाली है।
   अर्थात – अधिकांश जंतु गतिशील होते हैं, अर्थात् अपने आप और स्वंतत्र रूप से गति कर सकते हैं।

4. वाह! ओह ! ओ हो अरे!

5. भर – आज दिन भर बारिश होती रही।
   भी – तुम भी साथ चलोगे।
   केवल – केवल मैं अकेली आगरा चलूँगी।
   तसे – तुम ने तो कहा था आज आओगे।

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (क) 2. (घ) 3. (ख) 4. (ख) 5. (क) 6. (ख)

पाठ-17 वाक्य

(Page No - 108)

बताओ–

1. शब्दों के व्यवस्थित समूह को वाक्य कहते हैं।
2. रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद हैं– सरल, संयुक्त और मिश्र।
3. अर्थ के आधार पर वाक्य आठ प्रकार के होते है।

लिखो–

1. **उद्देश्य** — **विधेय**

उद्देश्य	**विधेय**
1. मेरा भाई	कल आगरा जा रहा है।
2. संत कवि कबीर	ने दोहे लिखे है।
3. राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी	ने देश को स्वतंत्र कराया
4. रवि की बहन रमा	अच्छी नर्तकी है।

2. (क) आज धनघोर वर्षा हुई थी।
   (ख) मैंने तुम्हें पुस्कत दी थी।
   (ग) बच्चों को सेब काटकर खिलाओ।
   (घ) परिश्रम सफलता की कुंजी है।

4. (क) विधानवाचक वाक्य (ख) संयुक्त वाक्य
   (ग) शर्तबोधक वाक्य (घ) आज्ञावाचक

4. (क) निषेधवाचक वाक्य (ख) प्रश्नवाचक वाक्य
   (ग) आज्ञावाचक वाक्य (घ) शर्तबोधक वाक्य
   (ङ) संदेहबोधक वाक्य (च) इच्छावाचक वाक्य

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (क) 2. (ख) 3. (ख) 4. (क) 5. (क)

पाठ-18 विराम-चिह्न

(Page No - 115)

बताओ–

1. हिंदी भाषा में भावों और विचारों को स्पष्ट करने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग वाक्य के बीच में या अंत में किया जाता है, उन्हें विराम-चिह्न कहते हैं। वाक्यों में रूकने के लिए विराम-चिह्नों का प्रयोग किया जाता है।
2. पूर्ण विराम से कम देर ठहरने के लिए अर्ध विराम का प्रयोग किया जाता है; जैसे– मिश्र तथा संयुक्त वाक्यों के विरोध का भाव प्रकट करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है; जैसे– वह कष्ट सहता रहा; लोग आनंद लेते रहे। इसके विपरीत अर्धविराम से कम देर रुकने के लिए अल्प विराम का प्रयोग किया जाता है। इसके प्रयोग स्थल हैं– कई शब्द होने पर – दिल्ली, मुंबई। 'हाँ' या 'नहीं' के बाद- हाँ, मैं पढ़ सकता हूँ।
3. इस चिह्न का प्रयोग सामासिक पदों, पुनरुक्त और युग्म शब्दों के मध्य किया जाता है; जैसे– सुख-दुख, तन-मन-धन। इसके विपरीत यह चिह्न योजक से बड़ा होता है। इसके प्रयोग निन्नलिखित स्थितियों में होता है- किसी के कथन से पहले- तुलसीदास का कथन है- " राम-नाम की महिमा अपार है।", कहा, लिखना, बोलना, बताना, आदि क्रियाओं के बाद- रजनी ने कहा- "मैं कल जाऊँगी।"
4. इस चिह्न को वाक्य क अंत अथवा मध्य में प्रयुक्त किया जाता है; जैसे– इतनी लंबी दीवार! यह चिह्न प्राय: हर्ष, विषाद, घृणा, आश्चर्य, भय आदि भावों के सूचक होते है।

लिखो–

1. 1. अमिताभ ने कहा– ' संघर्ष ही जीवन है।'
   2. बेटा सुबह जल्दी उठा करो, नहाधोकर पढ़ा करो, तभी तुम अच्छे अंक प्राप्त कर सकोगे।
   3. देवियो! अब तुम्हारे जागने का समय आ गया है।
   4. वाह! तुमने तो कमाल कर दिया।
   5. क्या मैं कल तक चला जाऊँ?
   6. वह दाल-रोटी की चिंता में घुला जा रहा है।
   7. कल डॉ० आया था; इलाज करके चला गया।

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (ग) 2. (ख) 3. (ख) 4. (क)

पाठ-19 मुहावरे और लोकोक्तियाँ

(Page No - 121)

बताओ–

1. साफ मना कर देना बहुत मेहनत करना भाग जाना
   बुरी तरह हराना क्रोध से देखना
2. हमने तो कुछ नहीं किया पर आप कौन सा आकाश के तारे तोड़ लाए।
   रमा घर के काम में अपनी माँ का हाथ बँटाती है।
   साँप को देखकर मेरे तो होश उड़ गए।
   अध्यापिका सभी छात्रों को एक ही लाठी से हाँकती है।
   युद् ध में अंग्रेज़ पीठ दिखाकर भाग गए।
   तुम तो राई का पर्वत बना देने की कला में माहिर हो।
3. मुँह में पानी भर आना ????
   नाक में दम करना दाल में काला होना
   ????
4. परिश्रम अधिक पर लाभ कर
   अपने स्वार्थ के लिए परिस्थितियों के अनुसार ढल जाता
   न पूरी होने वाली शर्त
   कम गुणी व्यक्ति ज्यादा दिखाव करता है।

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (ग) 2. (क) 3. (क) 4. (क)

पाठ-20 मौखिक रचना

(Page No - 124)

स्वयं करें।

पाठ-19 लिखित रचना

(Page No - 129)

अपठित रचना

1. (ख)	2. (क)	3. (क)	4. (ख)	5. (घ)
2. (घ)	2. (ख)	3. (क)	4. (क)	5. (ख)

पेज नम्बर 132 से 150 तक स्वयं करें।

पाठमाला - 7

पाठ-1 भाषा, लिपि और व्याकरण

(Page No - 8)

बताओ–

1. मानव-मुख से कई प्रकार की ध्वनियाँ निकलती हैं, पर जो ध्वनियाँ सार्थक शब्दों का निर्माण करती हैं, पर जो ध्वनियाँ सार्थक शब्दों का निर्माण करती हैं, वे ही भाषा का माध्यम बनती हैं। वस्तुतः ज्ञानार्जन और अभिव्यक्ति का सबसे सटीक साधन भाषा ही है। अतः हम कह सकते हैं: भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से मनुष्य अपने विचारों एवं भावों को परस्पर बोलकर या लिखकर प्रकट करता है।
2. भाषा के दो रूप हैं मौखिक और लिखित।
3. मातृभाषा – इस भाषा को बालक अपने परिवार में सीखता है। बच्चा माँ के मुख का देखकर और ध्वनियों को सुनकर मातृभाषा सीखता है। पंजाबी परिवार का बालक पंजाबी और तमिल परिवार का बालक तमिल स्वतः ही सीख जाता है।

   राष्ट्रभाषा – राष्ट्रभाषा वह होती है जिसे देश के अधिकांश नागरिकों द्वारा प्रयोग में लाया जाता है। हमारे संविधान में हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया गय है।

   राजभाषा – राजभाषा का प्रयोग सरकारी कामकाज में होता है। 14 सितंबर, 1949 को संविधान में हिंदी को राजभाषा के रूप में मान्यता दी गई। पर अंग्रेज़ी को सहभाषा के रूप में जारी रखा गया है।
4. आज हिंदी का क्षेत्र बहुत व्यापक हो गया है। विश्व में 150 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है।
5. भाषा के लिखित रूप को लिपि कहते हैं, भाषा का लिखित रूप उसके ध्वनि-चिह्नों से निर्मित होता है। अतः ध्वनि-चिह्न ही लिपि कहलाते हैं। ज्ञान-विज्ञान की अमूल्य निधि लिपि के द्वाा ही सुरक्षित है। अतः हम कह सकते हैं– मौखिक ध्वनियों के लिखित रूप को प्रकट करने के लिए निश्चित किए गए चिह्नों को लिपि कहते हैं।
6. व्याकरण वह शास्त्र है, जो भाषा को शुद्ध रूप में बोनना, पढ़ना व लिखना सिखाता है। व्याकरण भाषा के नियम बनाता है।

   व्याकरण के ज्ञान के बिना किसी भी भाषा का प्रयोग शुद्ध रूप में नहीं किया जा सकता। व्याकरण को व्यवहार में लाना सीखना चाहिए।

7. **भाषा** **लिपि**

हिंदी	देवनागरी
अंग्रेज़ी	रोमन
पंजाबी	गुरुमुखी
उर्दू	फ़ारसी
संस्कृत	देवनागरी
मराठी	देवनागरी

लिखो–

1. असमिया	कोकंणी	नेपाली	गुजराती
2. जर्मनी	ट्र्की	फ्रेंच	स्पेनिश
3. मलयालम	तमिल		

वर्ग-पहेली–

1. तमिल गुजराती तेलुगु पंजाबी मराठी कन्नड़ हिंदी मलयालम

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (क) 2. (ग) 3. (क) 4. (ख) 5. (ग) 6. (क)

पाठ-2 वर्ण-विचार और उच्चारण

(Page No - 17)

बताओ–

1. वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई है। वर्ण उस मूल ध्वनि को कहते हैं जिसके और टुकड़े न किए जा सकें।
2. जिन वर्णों का उच्चारण स्वतंत्र रूप से और बिना किसी रूकावट के होता हैं उन्हें स्वर कहते हैं। इनके उच्चारण में किसी अन्य वर्ण की सहायता नहीं ली जाती है। तृथापि जिन वर्णों का उच्चारण स्वरों की सहायता स होता हैं, वे व्यंजन कहलाते हैं। स्वरों की संख्या 11 होती हैं। जबकि व्यजनों की संख्या 33 होती है। स्वरों को दो भागों में बाँटा गया हैं ह्रस्व स्वर और दीर्घ स्तर तथा व्यंजन को तीन भागों में बाँटा गया हैं-स्पर्श, अतंस्थ और ऊष्म।
3. व्यंजन के तीन भेद हैं- स्पर्श, अंतस्थ और ऊष्म।
4. ह्रस्व स्वर – जिन स्वरों के उच्चारण में बहुत कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। ये चार हैं- अ, इ, उ, ऋ।
   दीर्घ स्वर – जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों की अपेक्षा दो गुना समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। इनकी संख्या सात है- आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।
5. अनुस्वार का अर्थ है- स्वर के बाद आने वाली ध्वनि इसका चिह्न– (ं) जैसे– कंगन, मंच, झंड़ा, कंपन आदि। इसके विपरीत अनुनासिक शब्दों के उच्चारण में हवा नाक और मुँह दोनों से निकलत हैं। इसका चिह्न चंद्रबिन्दु (ँ) हैं; जैसे– हसँना, चाँद, बूँद आदि।

लिखो–

1. (क) अयोगवाह (ख) अतंस्थ (ग) संयुक्त (घ) आगत

2. झंड़ा, झगड़ा ढ़ोलक, ढक्कण
3. क् + ई + त् + आ + ब् + अ व् + इ + द् + य् + आ + ल् + अ + य् + अ
द् + ई + ल् + ल् + ई ल् + आ + ल् + अ + क् + इ + ल् + आ
स् + त् + ऊ + प् + अ र् + अ + म् + ए + श् + अ
4. कंठ हिंदु परीक्षा जागरण बहन चिन्ह् घंटा चढ़ना नक्षत्र
5. झंड़ा, डंड़ा क्षत्रिय, क्षमा त्रिशूल, त्रिदेव ज्ञानी, अज्ञान श्रेया, श्रम

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (ख) 2. (ग) 3. (ख) 4. (क) 5. (ख) 6. (क)

पाठ-3 संधि

(Page No - 25)

बताओ–

1. जब दो वर्ण (ध्वनियाँ) पास-पास आती हैं तब उनके मेल से जो परिवर्तन या विकार होता है, उसे संधि, कहते हैं; जैसे– देव + आलय = देवालय।
2. संधि युक्त शब्दों को अलग-अलग करने का प्रक्रिया को संधि-विच्छेद कहते हैं; जैसे– उत् + ज्वल = उज्जवल (त् + ज् = ज्ज)
3. संधि के तीन भेद हैं- स्वर संधि, व्यंजन संधि, विसर्ग संधि।
4. स्वर संधि पाँच प्रकार की होती हैं–
दीर्घ संधि के उदाहरण – पीत + अंबर = पीतांबर, पर्वत + आरोहण = पर्वतारोहण
गुण संधि के उदाहरण – रवि + इंद्र + रवींद्र, गिरि + ईश = गिरीश
वृद्धि संधि के उदाहरण – सुर + इंद्र = सुरेंद्र, महा + इंद्र = महेंद्र
यण संधि के उदाहरण – एक + एक = एकैक, सदा + एव = सदैव
अयादि संधि के उदाहरण – यदि + अपि + यद्यपि, इति + आदि = इत्यादि
5. व्यंजन का व्यंजन अथवा स्वर से मेल हाने पर जो परिवर्तन होता है, वह व्यंजन संधि कहलाता है; जैसे– सम् + कल्प = संकल्प (व्यंजन + व्यंजन)

लिखो–

1. सिंहासन पर्वतरोहण नमस्ते उज्जवल दिंग्बर
2. लोकोक्ति = लोक + उक्ति दयानंद = दया + आंनद
पीतांबर = पीत + अंबर मुनीश = मुनि + ईश्वर
गंगोदक = गंग + उदक राजर्षि = राज + ऋषि
महोत्सव = महा + उत्सव पवन = पो + अन
निश्छल = नि: + चल दुष्कर्म = दु: + कर्म

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (क) 2. (ख) 3. (ख)

पाठ-4 शब्द-विचार

(Page No - 30)

बताओ–

1. एक से अधिक वर्णों के सार्थक समूह को शब्द कहते हैं; जैसे– प् + इ + त् + आ + ज् + ई – पिताजी
2. वर्णों के सार्थक मेल को शब्द कहते हैं परंतु जब इन शब्दों को क्रमानुसार वाक्य में प्रयोग किया जाता हैं तो ये पद कहलाते है।
3. संस्कृत भाषा के जो शब्द मूल रूप में हिंदी में प्रयुक्त हो रहे हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं; जैसे– दुग्ध, आम्र, रात्रि इसके विपरीत संस्कृत के वे शब्द जो थोड़े बदलाव के साथ हिंदी में प्रयुक्त हो रहे हैं, तद्भव शब्द कहलाते हैं; जैसे– दूध, आम, रात।
4. ये वे शब्द हैं जो दो या अधिक शब्दों के मेल से बने हैं। इन शब्दों के खंड किए जा सकते हैं, जैसे– भोजनालय (भोजन + आलय) इसके विपरीत योग + रूढ़ अर्थात् जो शब्द दो शब्दों के योग से बनकर किसी विशेष अर्थ में रूढ़ हो गए हैं। जैसे– दशानन – दश + आनन – 'रावण' के लिए
5. स्वर्ण – सोना   दुग्ध – दूध   मयूर – मोर   रात्रि – रात
   कर्ण – कान   अग्नि – आग   सूर्य – सूरज   दंत – दाँत
   घट – घड़ा   स्वप्न – सपना
6. विकारी शब्द – संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया
   अविकारी शब्द – क्रिया-विशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्यमयादिबोधक, निपात

लिखो–

1. (क) (7)   (ख) (3)   (ग) (7)   (घ) (3)   (ङ) (3)

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (ख)   2. (ग)   3. (ग)   4. (ग)   5. (क)

पाठ-5 शब्द-भंडार

(Page No - 34)

लिखो–

1. संख्या, गोद   चैन, मशीन   वंश, योग   वाण, किनारा
   चाल, दशा   धन, मतलब
2. आग, अनल   नयन, लोचन   बीजकोश, फर   लबोदर, गजानन
   सरोज, पंकज   पहाड़, भूधर
3. उन्नति – अवनति   जटिल – सरल   निर्बल – सबल
   नबीन – पुरातन   लौकिक – अलौकिक   अमृत – मृत
4. अनल – आग   अलि – भौरा   मूल – जड़
   अनिल – वायु   लौकिक – सखी   मूल्य – कीमत
   अंश – भाग   उदार – विशाल, हृदय
   अंस – कंघा   उदर – पेट

5. नास्तिक कृतज्ञ अलोकिक प्रत्यक्ष विश्वसनीय

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (घ) 2. (क) 3. (क) 4. (ख) 5. (क)

पाठ-6 शब्द-रचना

(Page No - 43)

बताओ–

1. जो शब्दांश मूल शब्द के आरंभ में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता ला देते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं, जैसे– कु + पुत्र = कुपुत्र, अ + सत्य = असत्य आदि।
2. जो शब्दांश मूल शब्द के अंत में लगकर नए शब्द बनाते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं; जैसे– दास + सा = दासता, बंगाल + ई = बंगाली।
3. जो प्रत्यय (शब्दांश) धातु (क्रिया का मूल रूप) में जुड़कर संज्ञा, विशेषण आदि शब्द बनाते है, उन्हें कृत् प्रत्यय कहते हैं जैसे– 'पढ़' धातु के साथ 'आई' प्रत्यय जुड़ने पर पढ़ + आई = लड़ाई आदि। इसके विपरीत वे प्रत्यय जो धातु से भिन्न किसी शब्द (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण) के अंत में जुड़कर नए शब्द बनाते हैं, उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते है।, जैसे– नौकर – नौकरानी, पंडित + आई = पंडिताई आदि।

लिखो–

1.

शब्द		**उपसर्ग**	**मूल शब्द**	**शब्द**		**उपसर्ग**	**मूल शब्द**
अभिमान	–	अभि	मान	सम्मान	–	सम्	मान
विज्ञान	–	वि	ज्ञान	अनमोल	–	अन	मोल
अवनति	–	अव	नति	उत्कर्ष	–	उत्	कर्ष
चौराहा	–	चौ	राहा	भरपेट	–	भर	पेट
कुसंगति	–	कु	संगति	परोपकार	–	परोप	कार

2. अवगुण, अवमुल्यन उतकर्ष, उत्थान अधिकाशं, अधिकता
   विशेष, विज्ञान सुगम, सुमार्ग

3.

शब्द		**मूल शब्द**	**प्रत्यय**	**शब्द**		**मूल शब्द**	**प्रत्यय**
भौगोलिक	–	भूगोल	इक	धार्मिक	–	धर्म	इक
जहरीला	–	जहर	ईला	घबराहट	–	घबरा	आहट
लिखाई	–	लिख	आई	खिलौना	–	खिल	औना
दयालु	–	दया	आलु	मरियल	–	मर	इयल

4. बताऊ, पिटवाऊ हवलदार, थानेदार समझदार, लेनेदार
   लुटिया, खटिया ओढ़नी, जादूगरनी पुष्पित, अंकुरित

3.

शब्द		**उपसर्ग**	**मूल शब्द**	**प्रत्यय**
अलौकिक	–	अ	लौक	ईक
अपमानित	–	अप	मान	इत
अनैतिक	–	अ	नीति	इक

स्वतंत्रता	–	स्व	तंत्र	ता
नासमझी	–	ना	समझ	ई

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (क) 2. (घ) 3. (ख) 4. (क) 5. (क)

पाठ-7 समास

(Page No - 49)

बताओ–

1. परस्पर संबंध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को समास कहते हैं। दो या दो से अधिक शब दों को मिलाकर लिखने की विधि को समास कहते हैं। समास से संक्षिप्तता और शैली में उत्कृष्टता एवं सटीकता आती है। उदाहरण के लिए, 'राजा का महल' के स्थान पर 'राजमहल' कहना अधिक उपयुक्त है। इस प्रक्रिया में दो पदों के बीच आने वाले परसर्गों या व्याकरणिक शब्दों का लोप हो जाता है और दानों पद पास-पास आ जाते हैं। उदाहरण के तौर पर – घोड़े पर सवार – घुड़सवार, नीले रंग का कमल – नीलकमल आदि।
2. समास के कुल छः भेद हैं– अव्ययीभाव समास, तत्पुरुष समास, द्विगु समास, द्वंद्व समास, कर्मधारय समास और बहुब्रीहि समास।
3. कर्मधारय और बहुब्रीहि समास में अंतर

   इस समास के कुछ उदाहरण ऐसे हैं जो कर्मधारय और बहुब्रीहि समास दोनों में पाए जाते हैं। इनका समझिए–

   कर्मधारय समास में उपमान-उपमेय का मेल होता है या विशेषण-विशेष्य का। इसमें किसी विशेष की ओर संकेत नहीं होता है; जैसे–

   पीतांबर – पीला (विशेषण) + अंबर (वस्त्र)

   कमलनयन – कमल (उपमान) + नयन (उपमेय)

   बहुब्रीहि समास में समस्तपद किसी विशेष की ओर संकेत करता है- पीतांबर-पीत अंबर हैं जिसके अर्थात् श्रीकृष्ण।

लिखो–

1.

समस्तपद		**विग्रह**	**समास**
घुड़सवार	–	घोड़े पर सवार	तत्पुरुष समास
चतुर्भुज	–	चार हैं भुजजाए जिसकी	बहृब्रीहि समास
भाई-बहन	–	भाई और बहन	द्वद्व समास
चौराहा	–	चार राहों का समूह	दि्वंगु समास
पंचवटी	–	पांच वटो का समूह	दि्वंगु समास
आजन्म	–	जन्म भर	अव्ययीभाव समास
रेखांकित	–	रेखा से अंकित	तत्पुरुष समास
यथाशक्ति	–	शक्ति के अनुसार	अव्ययीभाव समास

2. नीलकंठ — बहुब्रीहि समास
   दाल-रोटी — द्वद्ंव समास
   आजन्म — अव्ययीभाव समास
   त्रिमूर्ति — द्विंगु समास
   तुलसीकृत — तत्पुरुष समास
   नीलकमल — कर्मधारय समास

3. अव्ययीभाव समास – हाथोहाथ, यथासमय
   तत्पुरुष समास – बनवास पापमुक्त
   द्विगु समास – त्रिभुवन, शताब्दी
   द्वंद्व समास – पाप-पुण्य, राजा-रानी
   कर्मधारय समास – नीलकमल, महाराज
   बहुब्रीहि समास – पीतांबर, दशानन

वर्ग-पहेली

समस्तपद – पंचवटी, लंबोदर, नीलकंठ, त्रिफला, माता-पिता, आजीवन, घुड़सवार, बनवास, दशानन

समास – द्विंगु, बहुब्रीहि, द्विंगु, द्वद्व, तत्पुरुष, तत्पुरुष, बहुब्रीहि

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (ख) 2. (ख) 3. (क) 4. (ख) 5. (ख) 6. (ग)

पाठ-8 संज्ञा

(Page No - 59)

बताओ–

1. 'संज्ञा' अर्थात् नाम या पहचान। संसार में कोई भी वस्तु, प्राणी अथवा जीव बिना नाम के नहीं है। नाम ही उनकी पहचान है। ये नाम ही संज्ञा कहलाते है। अर्थात् किसी प्राणी, व्यक्ति, वस्तु स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं; जैसे गाय, रामलाल, मेज़ आदि।
2. संज्ञा के तीन भेद हैं– व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, भाववाचक संज्ञा
   व्यक्तिवाचक संज्ञा – किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु अथवा स्थान के नाम को व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे– ताजमहल, आगरा, यमुना आदि।
   जातिवाचक संज्ञा – जो शब्द किसी प्राणी, वस्तु, या स्थान की पूरी जाति का बोध कराते हैं, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे– मेज़, पुस्तक, पौधा आदि।
   भाववाचक संज्ञा – किसी भाव, गुण, दशा, अवस्था को बोध कराने वाले शब्द भाववाचक संज्ञा कहलाते हैं; जैसे– बुढ़ापा, मिठास, सुख आदि।

लिखो–

1. स्वतंत्र – स्वतंत्रता   बीमार – बीमारी   बचना – बचाव
   लाल – लालिका   खेलना – खिलाया   लड़का – लड़कपन
2. (क) मुझे बहुत भूख लगी है।   (ख) कमरे की ल ंबाई अधिक है।
   (ग) ??   (घ) लता को प्यास लगी है।
   (ङ) व्यवहार में कठोरता मत लाओ।

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (ख) 2. (घ) 3. (ग) 4. (ग)

पाठ-9 संज्ञा के विकार

(Page No - 68)

बताओ–

1. संज्ञा में तीन कारणों से विकार (परिवर्तन) आता है– लिंग, वचन, कारक। जैसे– पुजारी घंटी बजा रहा है।, बच्चे स्कूल जा रहे हैं।, राम ने पत्र लिखा।

लिखो–

1. (क) कवयित्री (ख) सम्राज्ञी (ग) हथिनी (घ) पंड़िताइन (ङ) मालिन
2. युवक – युवती नौकर – नौकरानी स्वामी – स्वामिन
   नर – नारी मालिक – मालकिन शेर – शेरनी
3. नर चीता, नर मक्खी मादा चीता, मादा मक्खी
4. लिपि – लिपियाँ गाय – गायें माला – मालाएँ
   बैल – बैलों लड़की – लड़कियाँ युवक – युवको
5. आँसू – खुशी की खबर सुनकर माँ की आँखो से आँसू निकल पड़े।
   दर्शन – हम सब कल साँई दर्शन के लिए जा रहे है।
   हस्ताक्षर – तुमने अपने अनुक्रमांक पर हस्ताक्षर कर लिए।
   होश – साँप को देख कर मेरे होश उड़ गए।
6. (क) मैंने दवाएं खरीदी। (ख) कुत्तें भौक रहे थे।
   (ग) पेड़ों पर पक्षी चहचहा रहे थे।
7. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों या क्रिया के साथ प्रकार होता है, उसे कारक कहते है। कारक के आठ भेद होते हैं– 1. कर्ता कारक 2. कर्म कारक 3. करण कारक 4. संप्रदान कारक 5. अपादान कारक 6. संबंध कारक 7. अधिकरण कारक 8. संबोधन कारक
8. (क) कर्म कारक (ख) अधिकरण कारक (ग) कर्म कारक
   (घ) अपादान कारक (ङ) अपादान कारक
9. पुलिस ने चोर पकड़ा। राधा दूध पी रही है।
   सोहन बल्ले से खेलता है। माँ को भोजन दो।
   गंगा हिमालय से निकलती है। थैले में फल है।

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (ग) 2. (ख) 3. (क) 4. (ख) 5. (घ) 6. (ख) 7. (क) 8. (ख)

पाठ-10 सर्वनाम

(Page No - 73)

बताओ–

1. संज्ञा के स्थान पर जिन शब्दों का प्रयोग होता हैं, उन्हें सर्वनाम कहते हैं; जैसे– वह, तुम, वे, आदि।
2. सर्वनाम के कुल छः भेद हैं– पुरुषवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, प्रश्नवाचक, संबंधवाचक और निजवाचक।

3. पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते हैं:
   1. उत्तम पुरुष – बोलने वाला या लिखने वाला अपने नाम के बदले जिस सर्वनाम का प्रयोग करता है, उसे उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे– मैं कल मुंबई आऊँगा।, हम आ रहे हैं।
   2. मध्यम पुरुष – जिससे बात की जाए या जिसे संबोधित किया जाए, उसके नाम के बदले प्रयुक्त सर्वनाम को मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे– तुम कब आए?
   3. अन्य पुरुष – जिसके बारे में बात करते हैं या लिखते हैं, उसके नाम के बदले प्रयुक्त सर्वनाम को अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे– वह पढ़ रहा है।
4. ये वे सर्वनाम हैं जो किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु की ओर (समीप या दूर) संकेत करते हैं; जैसे– जबकि ये वे सर्वनाम हैं जिनसे जिनसे किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध नहीं होता; जैसे- दूध में कुछ पड़ा है।

लिखो–

1. (क) हमारे (ख) कुछ (ग) कोई (घ) तुम (ङ) कुछ (च) स्वयं
2.

	सर्वनाम	**भेद**
(क)	कौन	प्रश्नवाचक
(ख)	जो, सो	संबंधवाचक
(ग)	कुछ	अनिश्चयवाचक
(घ)	कोई	अनिश्चयवाचक
(ङ)	वह	निजवाचक

3. डॉ. रतन प्रसिद्ध वैज्ञानिक थे। वे समुद्र की लहरों को देखते रहते थे। उन्होंने समुद्र के पानी के हरे-नीले रंग के बारे में सोचा। उनको नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया।

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (ग) 2. (घ) 3. (ख) 4. (ख)

पाठ-11 विशेषण

(Page No - 81)

बताओ–

1. जो शब्द संज्ञा या सर्वनम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं; जैसे– ये पाँच केले हैं।, लाल घोड़ा दौड़ रहा है।
2. विशेषण के चार भेद होते हैं–
   1. गुणवाचक विशेषण के उदाहरण – यह बालिका सुंदर है।
   2. संख्यावाचक विशेषण के उदाहरण – कक्षा में तीस छात्र हैं।
   3. परिमाणवाचक विशेषण के उदाहरण – दो लीटर दूध
   4. सार्वनामिक विशेषण के उदाहरण – वह घर किसका है?
3. जो विशेषण, विशेषण की विशेषता बताता है, उसे प्रविशेषण कहते हैं; जैसे– गीता अत्यंत सुंदर है।, वह बड़ी चतुर है।

लिखो–

1. (क) थोड़ा दूध (ख) कुछ पानी
2. (क) दो पेंसिल (ख) चार केले
2. (क) वह घर किसका है। (ख) कोई बालक खड़ा है।
4. (क) तीन संतरे – निश्चित संख्यावाचक
   (ख) थोड़ा दूध – अनिश्चित संख्यावाचक
   (ग) सुंदर – गुणवाचक
   (घ) कुछ फल – अनिश्चित परिमाणवाचक
   (ङ) दो मीटर – निश्चित परिमाणवाचक
5.

	विशेषण	**विशेष्य**
(क)	काला	घोड़ा
(ख)	तीन	केले
(ग)	दो लीटर	दूध
(घ)	कोई	बालक

6.

भूगोल	– भूगौलिक	इतिहास	–	ऐतिहासिक	धर्म	–	धार्मिक
नीति	– नैतिक	परिवार	–	पारिवारिक	वर्ष	–	वार्षिक

7. पुष्पित जीवित
8.

मूलावस्था	**उत्तरावस्था**	**उत्तमावस्था**
सुंदर	सुंदरता	सुंदरतम
योग्य	योग्यतर	योग्यतम
कठोर	कठोरतर	कठोरतम
उच्च	उच्चतर	उच्चतम
निम्न	निम्नतर	निम्नतम

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (क) 2. (घ) 3. (ख) 4. (ग) 5. (ख)

पाठ–12 क्रिया

(Page No - 87)

बताओ–

1. जिस पद (शब्द) से किसी काम के करने या होने का बोध हो, उसे क्रिया कहते हैं; जैसे– दौड़, खाना, पढ़ना आदि।
2. कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद हैं– अकर्मक क्रिया, सकर्मक क्रिया
   अकर्मक क्रिया के उदाहरण – मोहन सो रहा है।, गाड़ी आ रही है।
   सकर्मक क्रिया के उदाहरण – रवि पत्र लिख रहा है।, माली पौधों को सींच रहा है।

लिखो–

1. (क) उड़ रहे हैं। (ख) पत्र लिखता हूँ। (ग) खा चुका है।
   (घ) वर्षा होगी। (ङ) आया था।

2. (क) अकर्मक (ख) सकर्मक (ग) सकर्मक (घ) अकर्मक
   (ङ) द्विवकर्मक
3. (क) जाऊँगा (ख) पढ़ाती (ग) चली (घ) लिख
4. (क) मालकिन धोबी से कपड़े धुलवाती है।
   (ख) प्रंबधक माली से पौधे लगवाता है।
   (ग) माँ नौकरानी से बच्चो को दूध पिलवाती है।
5. (क) मारकर (ख) नहाकर (ग) सोकर (घ) चिल्लाकर

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (ख) 2. (ख) 3. (क) 4. (ख) 5. (ख)

पाठ–13 काल

(Page No - 94)

बताओ–

1. क्रिया के जिस रूप से उसके होने के समय का पता चले, उसे काल कहते हैं; जैसे बच्चे खेल रहे हैं।, राम ने रावण को मारा।, कल हम ताजमहल देखने जाएँगे। इन तीनों वाक्यों में क्रिया के होने के अलग-अलग समय का पता चल रहा है। पहले वाक्य में क्रिया हो रही है, दूसरे वाक्य में क्रिया हो रही है, दूसरे वाक्य में क्रिया समाप्त हो गई तथा तीसरे वाक्य में क्रिया अभी होगी। अतः यह काल हैं। काल के मुख्य रूप से तीन भेद हैं–
   1. वर्तमान काल 2. भूतकाल 3. भविष्यत् काल
2. वर्तमान काल के तीन भेद हैं:
   1. सामान्य वर्तमान काल – जो क्रिया वर्तमान काल में सामान्य रूप से होती है, उसे सामान्य वर्तमान काल कहते हैं, जैसे– दादी पूजा करती हैं।
   2. अपूर्ण वर्तमान काल – वाक्य की जिए क्रिया से यह पता चले कि काम वर्तमान काल में शुरू होकर अभी चल रहा है अर्थात् पूर्ण नहीं हुआ है, उसे अपूर्ण वर्तमान काल कहते हैं; जैसे– गोपाल गा ना सुना रहा है।
   3. संदिग्ध वर्तमान काल – जिस क्रिया के वर्तमान काल में पूरा होने के बारे में संदेह हो, उसे संदिग्ध वर्तमान काल कहते हैं; जैसे ग्वाला दूध लाता होगा।
4. क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया अभी कुछ समय पहले ही पूरी हुई है उसे आसन्न भूतकाल कहते हैं; जैसे– मैं अभी सोकर उठी हूँ।
5. भविष्यत् काल के दो भेद हैं-
   1. सामान्य भविष्यत् काल – क्रिया के जिस रूप से उसके भविष्य में सामान्य रूप से होने का पता चलता है, उसे सामान्य भविष्यत् काल कहते हैं; जैसे– हम परीक्षा देने जाएँगे।
   2. संभाव्य भविष्यत् काल – क्रिया के जिस रूप से उसके भविष्य में होने की संभावना का पता चले, उसे संभाव्य भविष्यत् काल कहते हैं; जैसे– शायद आज वर्षा होगी।

लिखो–

1. (क) सामान्य भूतकाल (ख) पूर्ण भूतकाल (ग) सामान्य भविष्यत काल
   (घ) अपूर्ण वर्तमान काल (ङ) हेतू-हेतूमद् भूतकाल (च) वर्तमान काल
   (छ) सामान्य भविष्यत् काल
2. (क) गीतिका कविता सुना रही थी। (ख) मोहन पुस्तक पढ़ रहा है।
   (ग) शायद आज वर्षा होगी। (घ) मैं पुस्तक खरीदूँगा।
   (ङ) वह कार लाएगा। (च) अध्यापिका हमें पढ़ाती थी।

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (ग) 2. (क) 3. (क) 4. (ग)

पाठ-14 वाच्य

(Page No - 94)

बताओ–

1. क्रियाओं के इसी विधान को वाच्य कहा जाता है। वाच्य के तीन भेद होते हैं– 1. कर्तृवाच्य 2. कर्मवाच्य 3. भाववाच्य

लिखो–

1. (क) कर्म वाच्य (ख) कर्म वाच्य (ग) कर्म वाच्य (घ)भाव वाच्य
   (ङ) कृर्त वाच्य
2. (क) पुलिस द्वारा चोर को पकड़ा गया। (ख) मेरे द्वारा पत्र लिखा गया।
   (ग) कवि द्वारा कविता सुनाई गई। (घ) मेरे द्वारा खाना नहीं खाया गया।
   (ङ) प्रधानमंत्री द्वारा भवन का शिलायास कराऐं।
3. (क) उससे लिखा नहीं जाता। (ख) मुझसे चला नहीं जाता।
   (ग) माँ से सोया नहीं जाता।

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (क) 2. (ग) 3. (ख)

पाठ-15 अव्यय/अविकारी शब्द

(Page No - 104)

बताओ–

1. जो शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, उन्हें क्रिया-विशेषण कहते हैं; जैसे– हम कल आगरा जाएँगे। वह कम खाता है।
2. क्रिया-विशेषण के चार भेद हैं–
   1. रीतिवाचक क्रिया-विशेषण के उदाहरण – घड़ी धीरे-धीरे चलती है।
   2. स्थानवाचक क्रिया-विशेषण के उदाहरण – वह ऊपर बैठा है।
   3. कालवाचक क्रिया-विशेषण के उदाहरण – रविदत्त परसो आएगा।
   4. परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण के उदाहरण – कल बोलो।

3. जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम के साथ आकर उनका संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ जोड़ते हैं, वे संबंधबोधक अव्यय कहलाते हैं। इनके पहले किसी न किसी परसर्ग की अपेक्षा रहती है। जैसे– वह घर से दूर पहुँच गया।
4. जो अव्यय दो पदों, पदबंधों और उपवाक्यों को जोड़ते हैं, उन्हें समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं; जैसे– राम और श्याम, नहा–धो लो और सो जाओ।
5. जो अव्यय शब्द विस्मय, हर्ष, शोक, घृणा, आदि मनोभावों को व्यक्त करते हैं, उन्हें विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं, जैसे– अरे राम, बाप रे, हाय आदि।

लिखो–

1. (क) इसलिए (ख) धीरे–धीरे (ग) अब (घ) के बाद (ङ) बाप रे!
2. समानाधिकरण समुच्चय बोधक (विरोध सूचक)
   समानाधिकरण समुच्चय बोधक (परिमाणवाचक)
   व्यधिकरण
   विस्मयादिबोधक (शोक सूचक)
   रीतिवाचक
3. (क) तत्काल – रीतिवाचक क्रिया–विशेषण
   (ख) कम – परिमाणवाचक क्रिया–विशेषण
   (ग) की ज़मीन – स्थानवाचक क्रिया–विशेषण
   (घ) ऊपर – स्थानवाचक क्रिया–विशेषण
4. स्कूल के पीछे मेरा घर है।
   बारिश होने के कारण वह घर देर से पहुँचा।
   रवींद्र की अपेक्षा सुरेन्द्र बुद्धिमान है।
   वह घर से दूर पहुचँ गया।
   छत के ऊपर मोर–नाच रहा है।
5. छिः हाय! वाह! ओह!
6. राम ने भी साईकिल चलाई।
   रमन ही वह लड़का हैं जो कक्षा में प्रथम आया।
   दूर तक कोई दिखाई नहीं दे रहा।
   दर्द के कारण मैं रात–भर सो न सकी।
7. संबंधबोधक – कितना, के ऊपर, के निकट, के नीचे
   समुच्चयबोधक निपात – और, ही

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (ग) 2. (ख) 3. (क) 4. (ग) 5. (क)

पाठ–16 पद–परिचय

(Page No - 110)

बताओ–

1. वाक्य में प्रयुक्त पदों के बारे में व्याकरणिक जानकारी देना ही पद–परिचय कहलाता है।

पद (शब्द) आठ प्रकार के होते हैं–

विकारी – 1. संज्ञा, 2. सर्वनाम, 3. विशेषण, 4. क्रिया

अविकारी – 5. क्रिया-विशेषण 6. संबंधबोधक 7. समुच्चयबोधक 8. विस्मयादिबोधक

2. प्रेमचंद व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिग

पुरुषवाचक सर्वनाम, बहुवचन, कर्ताकारक

सकर्मक क्रिया, एकवचन, वर्तमान काल, स्त्रीलिंग, कृर्तवाच्य

रीतिवाचक क्रिया विशेषण चलता है कि विशेषता

व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिग

विस्मयादिबोधक (अव्यय) हर्षसूचक

भाववाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (क)   2. (क)

पाठ-17 वाक्य

(Page No - 116)

बताओ–

1. सार्थक शब्दों के व्यवस्थित समूह को ही वाक्य कहते हैं; जैसे– वह गाय का दूध पीता है।
2. वाक्य के दो मुख्य अंग होते हैं: 1. उद्देश्य 2. विधेय

   1. उद्देश्य – झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने अग्रेज़ो से लोहा लिया।

      इस वाक्य में 'लक्ष्मीबाई ने' उद्देश्य है तथा झाँसी की रानी उद्देश्य का विस्तार है। अत: 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने' पूरा अंश उद्देश्य के अंतर्गत ही आएगा।

   2. विधेय – झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने अग्रेज़ो से लोहा लिया।

      इस वाक्य में 'अंग्रेज़ों से लोहा लिया' विधेय है।
3. रचना के आधार पर वाक्य तीन प्रकार के होते है–

   1. सरल वाक्य – रमेश ने खाना आया।
   2. संयुक्त वाक्य – मैं सातवीं कक्षा में पढ़ता हूँ और मेरी बहन चौथी कक्षा में।
   3. मिश्र वाक्य – अध्यापक ने बताया कि कल छुट्टी रहेगी।
4. अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद हैं– 1. विधानवाचक 2. निषधवाचक 3. प्रश्नवाचक 4. आज्ञावाचक 5. विस्मयादिबोधक 6. संदेहवाचक 7. इच्छावाचक 8. संकेतवाचक

लिखो–

1.	**उद्देश्य**	**विधेय**
(क)	मेरे पिताजी कल	अमेरिका जा रहे है।
(ख)	कलिंग का राजा	युद्ध में मारा गया।
(ग)	प्रधानाचार्य ने	पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

(घ) मेरी बहन गरिमा ने मोबाइल पर यह मैसेज भेजा है।
(ङ) मैं मेट्रो रेल में बैठकर चाँदनी चौक गई।

2. (क) सरल वाक्य (ख) संयुक्त वाक्य (ग) मिश्र वाक्य
   (घ) मिश्र वाक्य (ङ) मिश्र वाक्य

4. (क) प्रश्शनवाचक वाक्य (ख) निषेधात्मक वाक्य (ग) विधानवाचक वाक्य
   (घ) आज्ञावाचक वाक्य (ङ) इच्छावाचकवाक्य (च) संदेहवाचक वाक्य

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (घ) 2. (घ) 3. (ख) 4. (ग) 5. (घ)

पाठ-18 अशुद्ध वाक्यों का शोधन

(Page No - 120)

1. तुम अपने घर चले जाओ।
2. मैं अपना काम स्वयं कर लूगां।
3. आपकी मैं श्रद्धा करता हूँ।
4. माली पौधों को पानी से सीचंता है।
5. रोगी ने प्राण त्याग दिए।
6. बच्चें कक्षा में पढ़ नहीं रहें।
7. रमेश पक्का देशभक्त है।
8. भैंस का ताजी दूध स्वास्थ्यवर्धक होता है।
9. वह दंड देने योग्य है।
10. तुम जल्दी से कपड़े पहन ली।

पाठ-19 विराम-चिह्न

(Page No - 124)

बताओ–

1. भाषा के लिखित रूप में रुकने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें विराम-चिह्न कहते हैं।
2. अल्पविराम का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में किया जाता है–
   - एक ही प्रकार के कई शब्दों का प्रयोग होने पर; जैसे– दिल्ली, कोलकाता, मुंबई, और चेन्नई बड़े शहर हैं।
   - हाँ, नहीं के बाद जैसे– हाँ, तुम ठीक कहते हो।
   - तारीख के साथ महीने का नाम लिखने पर – 15 अगस्त, 1947
   - किसी के कथन का उद्धृत करने से पूर्व- तिलक ने कहा, “स्वराज्य जन्मसिद्ध अधि कार है।”
   - पत्र में संबोधन के बाद- महोदय, प्रिय मित्र, पुज्य पिताजी,

   अर्धविराम वाक्य में जहाँ अल्प विराम से कुछ अधिक और पूर्ण विराम से कुछ कम ठहरना हो, वहाँ अर्धविराम का प्रयोग किया जाता है। जैसे – गाँधीजी नहीं रहे; वे अमर हो गए।

लिखो–

1. (क) गुरुजी ने कहा– कल छुट्टी रहेगी।
   (ख) आप कब आए?

(ग) अरे! वह मर गया।
(घ) मेरे पास पुस्तकें, कापियाँ, पेंसिलें और पेन हैं।
(ङ) क्रिया के दो भेद हैं– सकर्मक और अकर्मक।
(च) वाह! कमाल हो गया।
(छ) 'लिंकन' से किसी ने एक बार पूछा; आपकी सफलता का राज क्या है? उन्होंने ज़रा देर सोचकर उत्तर दिया, मैं दूसरों की आवश्यक नुक्ताचीनी करके दिल नहीं दुखाता।

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (ग) 2. (ख) 3. (ग)

पाठ-20 मुहावरे और लोकोक्तियाँ

(Page No - 130)

बताओ–

1. भाषा को रोचक और प्रभावपूर्ण बनाने के लिए मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग किया जाता है।

2. मुहावरा वाक्य का अंग बनकर प्रयुक्त होता है, स्वतंत्र रूप से नहीं। जबकि लोक्कित सामाजिक जीवन के सनुभव से ही बनती है। यह एक पूर्ण वाक्य होती है।

लिखो–

1. (क) अँगूठा दिखाना – साफ मना कर देना – मुशीबत में समय रोहन के दोस्त ने उसे अगूँठा दिखा दिया।
(ख) नौ-दो ग्यारह होनो – भाग जाना – पुलिस को देखकर चोर नौ-दो ग्यारह हो गए।
(ग) ईद का चाँद होना – बहुत दिनों बाद दिखाई देना – तुम तो आजकल ईद का चाँद हो गए हो।
(घ) अंग-अंग ढीला होना – बहुत थक जाना – दिन भर कड़ी मेहनत के बाद अब मेरा अंग-अंग ढीला हो चुका है।
(ङ) आँखें दिखाना – क्रोध से देखना – तुम मुझे आँखे दिनाखे की कोशिश मत करो।
(च) आकाश से बातें करना – बहुत ऊँचा होनो – मुंबई की अनेक इमारते आकाश से बातें करती जान पड़ती है।
(छ) आग में घी डालना – क्रोध को भड़काना – तुम्हारी जली कटी बातों में लड़ाई में घी डालने का काम किया है।
(ज) उल्टी गंगा बहाना – नियम विरूद्ध काम करना – दिल्ली से पंजाब गेंहू भेजना तो उल्टी गंगा बहाने के समान है।
(झ) दाँतों तले उँगली दबाना – दंग रह जाना – ताजमहल की सुंदरता को डेखकर लोग दाँतो तलें उँगली दबा लेते है।
(ञ) आकाश-पाताल एक करना – बहुत परिश्रम करना – परीक्षा में प्रथम आने के लिए आकाश पाताल एक करना पड़ता है।

2. (क) नौ–दो ग्यारह हो जाना (ख) अँगूठा दिखाना (ग) फूला न समाना
(घ) नाक में दम करना (ङ) हाथ मलना

3. घोड़े बेचकर सो रहे थे। करवटें बदल तारे गिनते–गिनते
खट–खट चोर सेंध नौ–दो ग्यारह हो गए।

4. (क) मूर्खों में थोड़ा ज्ञानी
(ख) कम ज्ञान वाला व्यक्ति बहुत बढ़–चढ़ कर बोलता है।
(ग) चारों ओर से संकट में घिरना
(घ) दोषी व्यक्ति द्वारा निर्दोष पर दोष मँढ़ना
(ङ) सभी का एक जैसा होनो।

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (ख) 2. (क) 3. (क) 4. (ख) 5. (क)

पाठ–21 और 22 स्वयं करें।

पाठमाला - 8

पाठ–1 भाषा, बोली लिपि, व्याकरण और हिंदी

(Page No - 8)

बताओ–

1. मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहने के लिए दूसरे व्यक्तियों के संम्पर्क में रहना पड़ता है। वह दूसरों तक अपनी बात पहुँचाता है। तथा दूसरों की बात ग्रहण करता है। इसका माध्यम है – भाषा। अर्थात् भाषा वह साधन है जिसके द्‌वारा मानव अपने मन के भावों एवं विचारों का आदान–प्रदान करता है।
2. जब कोई भाषा काफी बड़े भू–भाग में प्रयुक्त होती है तब उसके कुछ क्षेत्रीय रूप विकसित हो जाते हैं, इन्हें बोली कहा जाता है। बाद में यही विकसित होकर भाषा का रूप ग्रहण कर लेती है। हिंदी भाषा की कुछ प्रमुख बोलियाँ इस प्रकार हैं–
   1. पश्चिमी हिंदी – ब्रजभाषा, खड़ी बोली, हरियाणवी
   2. पूर्वी हिंदी – अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी
   3. बिहारी हिंदी – मगही, मैथिली, भोजपुरी
   4. पहाड़ी हिंदी – मंडियाली, गढ़वाली, कुमाऊँनी
   5. राजस्थानी हिंदी – जयपुरी, मेवाती, मारवाड़ी, मेवाड़ी

   बोलियों में लोकगीत, लोककथाएँ आदि मिलती हैं।
3. भाषा के दो रूप हैं– मौखिक और लिखित।
4. भाषा के लिखित रूप के लिए लिपि की आवश्यकता होती है। मौखित भाषा को स्थायी रूप देने के लिए लिपि का आविष्कार हुआ। 'लिपि' का अर्थ है– लीपना। अर्थात् उच्चरित ध्वनियों को लिखने की विधि लिपि कहलाती है।

5. उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ , बिहारी, दिल्ली, एवं अंडमान-निकोबार राज्य-क्षेत्रों में हिंदी शासन और शिक्षा का माध्यम है।

लिखो–

1. हिंदी	–	देवनागरी	अंग्रेज़ी	–	रोमन	उर्दू	–	फ़ारसी
मराठी	–	देवनागरी	पंजाबी	–	गुरुमुखी	संस्कृत	–	देवनागरी

2. (क) भाष (ख) मौखिक (ग) द्रविद (घ) मानक

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (क) 2. (ख) 3. (ग)

पाठ-2 वर्ण-विचार

(Page No - 18)

बताओ–

1. भाषा की उच्चरित ध्वनियों के लिखित रूप को वर्ण कहते हैं। वर्ण मुख से निकली वह छोटी से छोटी ध्वनि है जिसके और टुकड़े नहीं किए जा सकते। वर्णों के दो वर्गों में बाँटा जाता है–
   1. स्वर –जिन वर्णों का उच्चारण बिना किसी अन्य वर्ण की सहायता से होता है और हवा मुँह से बिना किसी रुकावट के निकलती है, उन्हें स्वर कहते हैं। जैसे– अ, आ, इ, ई, उ, ऊ आदि।
   2. व्यंजन – जिन वर्णों के उच्चारण में वायु रुकावट के साथ या घर्षण के साथ मुँह से बाहर निकलती है, उन्हें व्यंजन कहते हैं। जैसे– क, ख, ग, घ, ङ आदि।
2. हिंदी वर्णमाला को देवनागरी लिपि में लिखा जाता है। हिंदी वर्णमाला में कुछ 52 वर्ण हैं– ये वर्ण पाँच प्रकार के हैं जो इस प्रकार हैं

स्वर	–	अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ
व्यजन	–	क्, ख्, ग्, घ्, ङ्, च्, छ्, ज्, झ्, ञ्, ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्, त्, थ्, द्, ध्, न्, प्, फ्, ब्, भ्, म्, य्, र ्, ल्, व्, श्, ष्, स्, ह्
अयोगवाह	–	अं, अः
अन्य	–	ड़, ढ़
संयक्त व्यंजन	–	क्ष, त्र, ज्ञ, श्र

3. अनुस्वार का उच्चारण नाक से किया जाता है। इसका चिह्न शिरोरेखा के ऊपर बिंदु (ं) के रूप में लगाया जाता है; जैसे– अंत, संत, कंगन, हंस, संतरा, आदि। जबकि अनुनासिक का उच्चारण के समय हवा नाक और मुख दोनों से दबाव के साथ बाहर निकलती है। इसका चिह्न चंद्रबिंदु के (ँ) के रूप में शिरोरेखा के ऊपर लागया जाता है।
4. जिन व्यंजनों के उच्चारण में मुख से कम वाय निकलती है, उन्हें अल्पप्राण व्यंन कहते हैं। ये निन्नलिखित हैं: क, ग, ङ, च ज ञ, ट, ड, ण, त, द, न, प, ब, म य, र, ल, व (प्रत्येक वर्ग का पहला, वर्ग का पहला, तीसरा, पाँचवा व्यंजन, अंतस्थ व्यंजन)

जिन व्यंजनों के उच्चारण में मुख से निकलने वाली श्वास की मात्रा अधिक होती है, उन्हें महाप्राण व्यंजन कहते हैं। ये निम्नलिखित हैं: ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, ढ़, थ, ध, फ, भ, श, ष, स, ह(सभी वर्गों के दूसरे चौथे व्यंजन और ऊष्म व्यंजन)

5.

वर्ग	**स्पर्श व्यंजन**	**उच्चारण स्थान**
कवर्ग	क श ग घ ङ	कंठ
चवर्ग	च छ ज झ ञ	तालु
टवर्ग	ट ठ ड ढ ण	मूर्धा
तवर्ग	त थ द ध न	दंत
पवर्ग	प फ ब भ म	ओष्ठ

लिखो–

1. गले से   कंठोष्ठ्य   तालु   कंठय   मूर्धन्य   मूर्धन्य
   दंत्य   दंतौष्ठ्य   दंतौष्ठ्य
2. (क) संयुक्त व्यंजन   (ख) अन्य   (ग) 11
3. स्पर्श व्यंजन – क, त, भ, ध, ण
   ऊष्म व्यंजन – श, स, ह
   अंतस्थ व्यंजन – य,र
4. किसान – क् + इ + स् + आ + न् + अ
   गन्ना – ग् + अ + न् + न् + आ
   अंधकार – अं + ध् + अ + क् + आ + र + अ
   क्यारी – क् + य् + आ + र + ई
   पर्वत – प् + अ + ट् + व् + अ + त्
   जलसा – ज् + अ + ल् + अ + स् + आ
5. दिपावली – दिपावली   रौशनी – रोशनी   परिक्षा – परीक्षा
   हिंदूओ – हिंदुओं   प्रसंसा – प्रंशसा   ग्रहस्थ – गृहस्थ
   प्रनाम – प्रणाम   श्रीमति – श्रीमती   व्यक्ति – व्यक्ति
6. क्ष – क्षमा, क्षमाशीला   त्र – त्रिशूल, त्रिपुरा   ज्ञ – ज्ञात, ज्ञानेश्वर
   श्र – श्रम, श्रमशील

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (क)   2. (ग)   3. (ग)

पाठ-3 शब्द-विचार

(Page No - 26)

बताओ–

1. वर्णों के मेल से बना स्वतंत्र एवं सार्थक ध्वनि-समूह शब्द कहलाता है। भाषा में शब्द का विशिष्ट स्थान होता है। शब्द भाषा की स्वतंत्र एवं अर्थवान इकाई है। शब्द और अर्थ में नित्य संबंध माना होता है। वास्तव में शब्द सार्थक होते हैं और वर्णों के विशिष्ट क्रम

से बनते हैं। जबकि शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त हो जाते हैं तब वे पद बन जाते हैं वाक्य वाक्य में प्रयुक्त होकर शब्द स्वतंत्र नहीं रहते हैं। जैसे– प् + उ + स् + त ् + अ + क् + अ = पुस्तक

2. रचना के आशर पर शब्द तीन प्रकार के होते हैं–
   1. मूल शब्द (रूढ़ शब्द) के उदाहरण – पुस्तक
   2. यौगिक शब्द के उदाहरण – सेना + पति = सेनापति
   3. योगरूढ़ शब्द के उदाहरण – जलज (जल + ज) – कमल के लिए रूढ़
3. तत्सम (तत् + सम) शब्द का अर्थ है- 'उनके समान'। यहाँ 'उस' से तात्पर्य है- संस्कृत के समान। अर्थात् हिंदी में बहुत सारे शब्द संस्कृत से उसी रूप में ग्रहणा कर लिए गए हैं जिस रूप में उनका प्रयोग संस्कृत में होता है। इसलिए उन्हें तत्सम शब्द कहते हैं जबकि तद्भव का अर्थ है- 'उससे उत्पन्न'। संस्कृत के वह शब्द जो हिंदी में परिवर्तित रूप में प्रचलित हैं, उन्हें तद्भव शब्द कहते हैं। जैसे–

तत्सम	**तद्भव**	**तत्सम**	**तद्भव**
अक्षि	आँख	अग्नि	आग
ओष्ठ	ओठ	ग्राम	गाँव

4. विकारी शब्द वे होते हैं जिनमें प्रयोग के समय लिंग, वचन, कारक, काल के कारण विकार(परिवर्तन) आ जाता है। इसके विपरीत अविकारी शब्द वे होते हैं जिनके मूल रूप में कोई विकार या परिवर्तन नहीं होता। इन्हें अव्यय भी कहा जाता है। विकारी शब्द के भेद हैं– संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया तथा अविकारी शब्द के भेद हैं– क्रिया-विशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्यमयादिबोधक, निपात
5. देशज – पगड़ी, लोटा खाट, झाडू
   विदेशी – अखबार, कानून, जलसा, अदालत

लिखो–

1. **तत्सम** – मयूर, सूर्य, चाँद
   तद्भव – आम, आँख, आग, अखबार
   देशज – लोटा, मुहाावरा
   विदेश – खुशामद, दफ्तर, बजट, बीमा, लाटरी, अखबार, चाय

2.	ओष्ठ	ओठ	दुग्ध	दुध
	कर्ण	कान	अग्नि	आग
	क्षेत्र	खेत	नासिका	नाक
	अक्षि	आँख	हस्त	हाथ
3.	अखबार	अरबी	कानून	अरबी
	कुरता	तुर्की	ज़ंजीर	फारसी
	कूपन	अंग्रेज़ी	फ्लैट	अंग्रेजी
	स्पूतनिक	अन्य भाषा	रिक्शा	अन्य

4. **रूढ़** – पंकज, घर, पुस्तक, दीपक, कुरसी
यौगिक – पाठशाला, विद्यार्थी
योगरूढ़ – लंबोदर चतुर्भुज, दशानन

5. कल – चैन, मशीन
काल – समय, उपयुक्त
कर – हाथ, राजा द्वारा लिया जाने वाला धन
कनक – सोना, धतूरा
पृष्ठ – भाग, अंतिम शब्द
मत – राय, संप्रदाय
तीर – बाण, किनारा
कुल – वंश, सब

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (घ) 2. (क) 3. (क) 4. (ग) 5. (घ) 6. (ख)

पाठ-4 संधि

(Page No - 35)

बताओ–

1. दो ध्वनियों के पास-पास होने के कारण उनके आपसी मेल से उत्पन्न विकार (परिवर्तन) को संधि कहते हैं। जैसेँ विद्यालय, दीपावली आदि।
2. संधि के तीन भेद होते हैं– स्वर संधि, व्यंजन संधि, विसर्ग संधि
   1. स्वर संधि के उदाहरण – सिंह + आसन = सिंहासन
   2. व्यंजन संधि के उदाहरण – सत् + जन = सज्जन
   3. विसर्ग संधि के उदाहरण – निः + छल = निश्छल
3. दो स्वरो के परस्पर मेल के कारण उनमें जो परिवर्तन होता है, उसे स्वर संधि कहते हैं। जैसे– नर + ईश = नरेश स्वर संधि के पाँच भेद होते हैं– दीर्घ संधि, गुण संधि, वृद्धि संधि, यण संधि, अयादि संधि
4. व्यंजन संधि में व्यजन का स्वर अथवा व्यंजन के साथ मेल से परिवर्तन आता है। जैसे– सत् + जन = सज्जन, तत् + लीन = तल्लीन
5. व्यंजन संधि के दो प्रमुख नियम निम्नलिखित है:-
   1. 'म' के बाद क से म तक कोई भी व्यंजन हो जो वह उसी वर्ग के पंचम वर्ण (ङ, ञ, ण, न, म) में बदल जाता है। (पंचम वर्ण अनुस्वार (ं) के रूप में प्रयुक्त होता है। जैसे– सम् + तोष = संतोष, अह्म + कार + अहंकार
   2. 'म' के बाद यदि य, र, ल, व, श, ष, स, ह, हो तो 'म्' अन‌ुस्वार का रूप ले लेता है; जैसे– सम् + योग = संयोग, सम् + लाप = संलाप
6. ए + अ = अय् – ने + अन = नयन, ऐ + अ आय् – गै + अक = गायक
7. विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन आने पर विसर्ग में जो परिवर्तन होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं; जैसे– मनः + बल = मनोबल।

लिखो–

1. पर्वतारोहण सिंहासन कमतेशवर कविंद्र दीक्षांत गुरूपदेश
समर्योदय नीला आकश सद्गति षड्दर्शन अधोगति मनोबल

2. उन्नति = उत् + नति | सज्जन = सत् + जन
उद्धार = उत् + धार | मुनींद्र = मुनि + इंद्र
परीक्षा = परि + ईक्षा | वधूत्सव = वधू + उत्सव
स्वेच्छा = स्व + इच्छा | लघूत्तर = लघु + उत्तर
हरीच्छा = हरी + इच्छा | यथार्थ = यथ + आर्थ
स्वागत = सु + आगत | शुभारंभ = शुभ + आरंभ

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (ख) 2. (क) 3. (ग) 4. (क) 5.(ख)

पाठ-5 उपसर्ग

(Page No - 40)

बताओ–

1. उपसर्ग वे लघुतम शब्दांश हैं जो मूल शब्द के पहले लगाकर नए शब्द का निर्माण करते हैं। उपसर्ग मूल शब्द के प्रारंभ में लगाए जाते है। अध – अध + पका = अधपका, अध – अध + खिला = अधखिला।
2. हिंदी भाषा में तीन प्रकार के उपसर्ग प्रयुक्त होते हैं – तत्सम (संस्कृत), तद्भव (हिंदी), आगत उर्दू, फ़ारसी के

	उपसर्ग	**अर्थ**	**उदाहरण**
तत्सम उपसर्ग के उदाहरण –	आ	तक, पर्यत	आमरण, आदान
	अति	अधिक	अत्यधिक, अधिपति
तद्भव उपसर्ग के उदाहरण –	अ	अभाव/निषेध	अछूत, अगम, अमर
	अन	कभी/निषेध अनपढ़,	अनहोनी, अनजान
आगत उपसर्ग के उदाहरण –	ब	से/ के साथ	बखूबी, बनाम
	बा	साथ	बाकायदा, बाअदब

लिखो–

1. अ – अचार, अदूत | आ – आकार, आहट
अति – अतिश्य, अतिक्रमण | अनु – अनुसरण, अनुक्रमांक
उत् – उत्थान, उत्कर्ष | अप – अपकर्ष, अपनापन
प्र – प्रसिद्ध, प्रतिभा | कु – कुमार्ग, कुसुम
अध – अधखिला, अधपका | ब – बखुबी, बदौलत

2.

शब्द	**उपसर्ग**	**मूल शब्द**	**शब्द**	**उपसर्ग**	**मूल शब्द**
अधिवक्ता –	अधि	वक्ता	अनुचर –	अनु	चर
निर्जीव –	निर्	जीव	विशिष्ट –	विश	इष्ट
सम्मान –	सम्	मान	कुपुत्र –	कु	पुत्र
अछूत –	अ	छूत	प्रत्युपकार –	प्रति + उप	कार

3. (क) अन्याय, अधर्म, अत्याचार (ख) कमअक्ल, गैर-जिम्मेदार
(ग) सब-जज, डिप्टी डायेरेक्टर, बाइज़्ज़त

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (क) 2. (ख) 3. (ग)

पाठ–6 प्रत्यय

(Page No - 44)

बताओ–

1. जो शब्दांश किसी शब्द के अंत में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं या नया शब्द बना देते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं; जैसे– सुंदर + ता = सुंदरता, लघु + ता = लघुता आदि।
3. उपसर्ग वे शब्दांश होते है जो मूल शब्द के प्रारंभ में लगाए जाते हैं जबकि प्रत्यय शब्द के अंत में लगते हैं। जैसे– अव + गुण = अवगुण; अ + छूत = अछूत ये उपसर्ग के बने शब्द हैं तथा पशु + ता = पशुता; बुढ़ा + आपा = बुढ़ापा ये शब्द प्रत्यय से बने है।

लिखो–

1.

शब्द		**मूल शब्द**	**प्रत्यय**	**शब्द**		**मूल शब्द**	**प्रत्यय**
पशुता	–	पशु	ता	भव्यता	–	भव्य	ता
देवत्व	–	देवत्व	त्व	सुरीला	–	सुर	ईला
नमकीन	–	नम	कीन	कुशलता	–	कुशल	ता
बुढ़ापा	–	बुढ़ा	आपा	सामाजिक	–	समाज	ईक
अपमानित	–	अप	मानित	झगड़ालू	–	झगड़	आलू

2. इया – डिबिया, खटिया
   आर – कुम्हार, गुहार
   आहट – कुम्हार, गुहार
   ईल – गरमाहट, चमकीला
   ई – पहाड़ी, खेती
   अक्कड़े – भुल्लकड़, पियक्कड़
3. (क) मंचीय, लेखक, आमंत्रित
   (ख) नगरिक, महँगाई, दुखी
   (ग) शत्रुता,
   (घ) हर्षित
4. भू + अक्कड़ = भूलक्कड़
   डिब्बा + इया = डिबिया
   बर्फ़ + ईला = बर्फ़ीला
   पाठ + अक = पाठक
   देव + त्व = देवत्व

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (ग) 2. (ग) 3. (घ) 4. (ख)

पाठ–7 समास

(Page No - 49)

बताओ–

1. परस्पर संबंध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को स मास कहते हैं। या दूसरे शब्दों में कहें तो दो या दो से अधिक शब्दों को संक्षिप्त कर नया शब्द बनाने की विधि को समास कहते हैं; जैसे– घोड़े पर सवार = घुडसवार आदि।

2. समास के कुल छः भेद हैं–

अव्ययीभाव समास का उदाहरण – आजन्म = जन्म से लेकर

तत्पुरुष समास का उदाहरण – राजा का पुत्र = राजपुत्र

कर्मधारय समास का उदाहरण – नीकमल = नीले रंग का कमल

द्विगु समास का उदाहरण – चौराहा = चार राहो का समाहार

द्वंद्व समास का उदाहरण – भाई-बहन = भाई और बहन

बहुब्रीहि समास का उदाहरण – पीतांबर = पीत (पीला) है अंबर जिसका अर्थात् श्रीकृष्ण

3. अव्ययीभाव समास के उदाहरण –

समस्त पद	**विग्रह**	**समस्त पद**	**विग्रह**
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार	प्रतिदिन	प्रत्येक दिन
यथामति	मति के अनुसार	भरपेट पेट	भरकर

4. कर्मधारय और बहुवीहि समास में अंतर

कर्मधारय समास के दोनों पदों में विशेषण-विशेष्य अथवा उपमान-उपमेय का संबंध होता है जबकि बहुब्रीहि समास में दोनों पद गौण होते हैं तथा वे किसी तीसरे पद की ओर संकेत करते हैं।

चरण-कमल – कमल के समान चरण (कर्मधारय समास)

कमल के समान चरण हैं जिसके अर्थात् श्रीकृष्ण (बहुब्रीहि समास)

लिखो–

1.

समस्तपद		**विग्रह**	**समास**
यथाशक्ति	–	शक्ति के अनुसार	अव्ययीभाव समास
बनवास	–	वन का वास	तत्पुरुष समास
त्रिभुज	–	तीन भुजाओ का समूह	द्विंगु समास
नीलगाय	–	नीले रंग की गाय	कर्मधारय समास
दशानन	–	दस है आनन जिसके	बहुब्रीहि समास
आजन्म	–	जन्म भर	अव्ययीभाव समास
घुड़सवार	–	घोड़े पर सवार	अधिकरण तत्पुरुष समास
पंचवटी	–	पाँच वटायों का समूह	द्विंगु समास
रेखांकित	–	रेखा से अंकित	तत्पुरुष समास
विद्याधन	–	विद्या रूपी धन	कर्मधारयसमास
नीलकंठ	–	नीला है कंठ जिसका	बहुब्रीह समास
राजकुमार	–	राजा का कुमार	संबंध तत्पुरुष समास

2.

रसोई के लिए घर	– रसोईघर	राष्ट्र का पति	– राष्ट्रपति
पीत अंबर हैं जिसके	– पीतांबर	दाल और भात	– दाल-भात
तीन फलों का समाहार	– त्रिफला	कमल के समान नयन	– कमलनयर
पाप और पुण्य	– पाप-पुण्य	जन्म भर	– जन्मभर
आठ अध्यायों का समाहार	– अष्टाध्यायी	पेट भरकर	– पेटभर
चार भुजाएँ हैं जिसकी	– चतुर्भुज		

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (क) 2. (ख) 3. (ख) 4. (क) 5. (ग)

पाठ–8 संज्ञा

(Page No - 55)

बताओ–

1. किसी व्यक्ति, प्राणी, वस्तु, स्थान, या भाव आदि के नाम का बोध कराने वाले शब्दों को संज्ञा कहते हैं। जैसे – महेश, गंगा गाय आदि।
2. संज्ञा के तीन भेद हैं– व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, भाववाचक संज्ञा
   व्यक्तिवाचक संज्ञा के उदाहरण – ताजमहल, आगरा, यमुना आदि।
   जातिवाचक संज्ञा के उदाहरण – मेज़, पुस्तक, पौधा आदि।
   भाववाचक संज्ञा के उदाहरण – बुढ़ापा, मिठास, सुख आदि।

लिखो–

1. , , हिमालय पर्वत, गंगा नदी, , हरिद्वार, सुंदरता

2\.

संज्ञा शब्द	**संज्ञा–भेद**	**संज्ञा शब्द**	**संज्ञा–भेद**
मोहन	व्यक्तिवाचक संज्ञा	लड़का	जातिवाचक संज्ञा
हिमालय पर्वत	व्यक्तिवाचक संज्ञा	गंगा	व्यक्तिवाचक संज्ञा
हरिद्वार	व्यक्तिवाचक संज्ञा	पवित्रता	भाववाचक संज्ञा
बचपन	भाववाचक संज्ञा	ऊँचाई	भाववाचक संज्ञा
गहराई	भाववाचक संज्ञा	सुंदरता	भाववाचक संज्ञा

2\.

लड़का	–	लड़ाकू	चतुर	–	चतुराई	बच्चा	–	वचपन
बुनना	–	बुनाई	शत्रु	–	शत्रुता	पढ़ना	–	पढ़ाई
मीठा	–	मिठास	पंडित	–	पंडिताई	लड़ना	–	लड़ाई

3. गणनीय – पेड़, कुरसी, घर
   अगणनीय – दूध, गेहूँ, आटा, हवा

2. (क) पढ़ाई (ख) बुढ़ापे (ग) मनुष्यता (घ) चतुराई (ङ) मिठास

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (क) 2. (ख) 3. (क) 4. (क)

पाठ–9 लिंग

(Page No - 60)

बताओ–

1. शब्द के जिस रूप से यह पता चले कि वह पुरुष जाति का है अथवा स्त्री जाति का, उसे व्याकरण में लिंगब कहा जाता है। जैसे– आदमी भोजन कर रहा है। (प्रकृति लिंग–पुल्लिग), औरत खाना पका रही है। (प्रकृति लिंग– स्त्रीलिंग), पंखा चल रहा है। (क्रिया के पहचान– पुल्लिग) घड़ी चल रही है। (क्रिया के पहचान – स्त्रीलिंग)

2. हिंदी में लिंग दो प्रकार के होते हैं–
पुल्लिग – कपड़ा, भारत, चीन, आदि।
स्त्रीलिंग – हिंदी, अंग्रज़ी, चीनी आदि।

लिखो–

1. (क) सम्राज्ञी (ख) पाठिका (ग) कवयित्री (घ) ग्रहस्वामिनी (ङ) अभिनत्री

2. धोबी	–	धोबिन	श्रीमान	–	श्रीमति	मोर	–	मोरनी
नौकर	–	नौकरानी	लेखक	–	लेखिका	शेर	–	शेरनी
देवर	–	देवरानी	बंदर	–	बंदरिया	साधक	–	साधिका
3. विधवा	–	स्त्रीलिंग	ग्वाला	–	पुल्लिग	वर	–	पुल्लिग
मोरनी	–	स्त्रीलिंग	नायिका	–	स्त्रीलिंग	पाठक	–	पुल्लिग
बलवती	–	स्त्रीलिंग	नायिका	–	स्त्रीलिंग			
4. बलवान	–	बलवती	सिंहनी	–	सिंह	लुहार	–	लुहारिन
हथिनी	–	हाथी	भैंस	–	भैंसा	नाइन	–	नाई

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (क) 2. (क) 3. (ख)

पाठ-10 वचन

(Page No -66)

बताओ–

1. शब्द के जिस रूप से उसके एक या अनेक होने का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं।
वचन के दो भेद होते हैं–
एकवचन – आम, बाग, तालाब बहुवचन – दूध, चीनी, पानी, आदि।
2. वचन की पहचान मुख्यतः दो प्रकार से की जाती है-
1. संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण शब्दों द्वारा
जैसे– शिक्षक ने पाठ पढ़ाया (एकवचन), शिक्षकों ने पाठ पढ़ाया (बहुवचन)
2. क्रिया के रूप द्वारा
जैसे– अध्यापक पढ़ा रहा है। (एकवचन), अध्यापक पढ़ा रहे हैं। (बहुवचन)

लिखो–

1. (क) उन स्त्रियों ने खाना खा लिया है। (ख) दो लड़के आ रहें है।
(ग) उस कमरे में बिजली नहीं है। (घ) यहाँ मलिाएं लड़ रही है।
(ङ) उनकी रूचियाँ भिन्न है।
2. (क) हमारे गाँव बहुत पिछड़े हुए है। (ख) उनकी बेटियाँ यहाँ रहती है।
(ग) मिठाई पर मक्खियाँ बैठी है। (घ) किताबें कौन ले गया।

3. धोबी	–	धोबियों	साड़ी	–	साड़ियों	लड्डू	–	लड्डूओं
बच्चा	–	बच्चों	गुड़िया	–	गुड़ियों	कहानी	–	कहानियों
कमरा	–	कमरों	छात्रा	–	छात्रों	ऋतु	–	ऋतुओं
नदी	–	नदियों						

4. बृद्धाओं –	विधवा	महिलाओं –	महिला	कहानियाँ –	कहानी
योद्धाओं –	योद्धा	कथाएँ –	कथा		
4. संस्कृति –	एकवचन	आँसू –	बहुवचन	पहेली –	एकवचन
हस्ताक्षर –	बहुवचन	पोशाक –	एकवचन	जनता –	बहुवचन
विधियों –	बहुवचन	दस्ता –	??	गायिकाएँ –	बहुवचन
प्राण –	बहुवचन				

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (ख) 2. (ग) 3. (क)

पाठ-11 कारक

(Page No -72)

बताओ–

1. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध क्रिया के साथ जाना जाए, उसे कारक कहते हैं; जैसे– सचिन ने केला खाया।
2. कारक आठ प्रकार के होते हैं:

कारक के भेद	**कारक-चिह्न (परसर्ग)**	**उदाहरण**
कर्ता कारक	ने	सचिन ने पुस्तक पढ़ी।
कर्म कारक	को	मैं साक्षी को बुलाऊँगा।
करण कारक	से, के द्वारा	उसे तार द्वारा सूचित करो।
संप्रदान कारक	को, के लिए	गरीबों को खाना दो।
अपादान कारक	से (पृथकता)	वह घोड़े से गिर पड़ा
संबंध कारक	को, के, की, रा, रे, री	राम का भाई, मोहन के बच्चे
अधिकरण कारक	में, पर	बैग में किताबें हैं।
संबोधन कारक	हे!, अरे!	हे ईश्वर! रखा करो।

3. 'करण' का अर्थ है- साधन या माध्यम। – जिसका सहायता से क्रिया सम्पन्न हा वह संज्ञा/सर्वनाम करण कारक होता है। इसके विभक्ति चिह्न (परसर्ग) हैं-से, के द्वारा। मैं पेन से चिट्ठी लिखता हूँ। जबकि संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से अलग होने का भाव प्रवट हो, वहाँ अपादान कारक होता है। इसका परसर्ग 'से' होता है। जैसे– पेड़ से पत्ता गिरता है।

लिखो–

1. (क) राम ने खाना खा लिया है। (ख) श्याम ने मोहन को पुस्तक दी।
   (ग) आपने यह क्यों कहा? (घ) प्रधानमंत्री ने बाढ़ग्रस्त क्षेत्र का दौरा किया।
2. (क) से – करण काक (ख) से – करण कारक (ग) को – संप्रदान कारक
   (घ) के लिए – अधिकरण (ङ) के लिए – संप्रदान (च) को – संप्रदान
3. (क) संप्रदान कारक (ख) अपादान (ग) करण कारक
   (घ) अधिकरण (ङ) संप्रदान
4. का, में, से , ने, पर

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (ग)   2. (क)   3. (ख)

पाठ–10 सर्वनाम

(Page No - 77)

बताओ–

1. संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। इसका प्रयोग संज्ञा की बार–बार आवृति से बचने के लिए किया जाता है; जैसे– मैं, हम, तुम, आप आदि।
2. सर्वनाम के कुल छः भेद हैं–
   1. पुरुषवाचक सर्वनाम के उदाहरण – मैं कल चलूँगा।
   2. निश्चयवाचक सर्वनाम के उदाहरण – वह रहा मेरा मकान।
   3. अनिश्चयवाचकसर्वनाम के उदाहरण – दरवाज़े पर कोई खड़ा है।
   4. प्रश्नवाचक सर्वनाम के उदाहरण – बाहर कौन खड़ा है?
   5. संबंधवाचक सर्वनाम के उदाहरण – जो परिश्रम करेगा वह सफल होगा।
   6. निजवाचक सर्वनाम के उदाहरण – मैं अपना काम स्वयं कर लूँगा।

लिखो–

1. मेरा, उसका, तुम, उसके, वह, तुमसे
2. (क) अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम   (ख) अनिश्चयवाचक सर्वनाम
   (ग) अनिश्चयवाचक सर्वनाम   (घ) प्रश्नवाचक सर्वनाम
   (ङ) निश्चयवाचक सर्वनाम
3. (क) कोई बाहर आया है, उसे अंदर बुलाओ।   (ख) तुम अपनी किताब लाओ।
   (ग) तुमसे से कोई काम नहीं होता।   (घ) स्कूल के पास कौन–सा घर है?
   (ङ) जो परिश्रम करेगा वही सफल होगा।

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (ख)   2. (क)   3. (ग)

पाठ–11 विशेषण

(Page No - 84)

बताओ–

1. जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं; जैसे– गणेश ने लाल कमीज़ पहन रखी है।, मैं मीठे आम लाया हूँ। इन वाक्यों में लाल और मीठे शब्द अपनी–अपनी संज्ञाओं – कमीज़ और आम की विशेषता बता रहे हैं। ऐसे शब्दों को विशेषण कहा जाता है।
2. जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं उसे विशेषता कहते हैं जबकि ऐसे शब्द जिनकी विशेषता बताई जाती हैं उन्हे विशेष्य कहा जाता हैं जैसे – गणेश ने लाल कमीज़ पहनी हैं इसमें कमीज़ शब्द की विशेषता बताई गई हैं कि वह लाल हैं इसलिए कमीज़ विशेष्य तथा लाल विशेषण हैं।

3. विशेषण के चार भेद होते हैं–

1. गुणवाचक विशेषण के उदाहरण – वह अच्छा लड़का है।, मेरी नीली साड़ी देखो।
2. संख्यावाचक विशेषण के उदाहरण – तीन बालक खड़े हैं।, ढाई रुपया दीजिए।
3. परिमाणवाचक विशेषण के उदाहरण – चार किलों चीनी दीजिए।, चार मीटर कपड़ा
4. सार्वनामिक विशेषण के उदाहरण – वह छात्र प्रथम आया है।, यह मकान बड़ा है।

4. जो विशेषण विशेषणों की विशेषता बताते हैं, उन्हें प्रविशेषण कहते हैं। जैसे– मोहन बहुत चतुर हैं।, गहरा नीला कोट पहनो।

5. विशेषणों की तुलनात्मक अवस्थाएँ होती है। यह तुलना तीन प्रकार से हो सकती है।

मूलावस्था –इसमें तुलना नहीं होती। यह मूलावस्था होती है–जेसे आम मीठा है।, वह सुंदर है।

उत्तरावस्था – इसमें दो व्यक्तियों, प्राणियों, वस्तुओं आदि की विशेषता की त ुलना की जाती है, इस तुलना में प्रायः तर लगाया जाता है। जैसे– सुंदरतर।

उत्तमावस्था – इसमें दो से अधिक व्यक्तियों, प्राणियों, वस्तुओं की विशेषता की तुलना की जाती है तथा एक को सकसे अधिक बताया जाता है। इस तुलना में तम लगाया जाता है। जैसे– सुंदरता

मूलावस्था	**उत्तरावस्था**	**उत्तमावस्था**
सुंदर	सुंदरतर	सुंदरतम
निम्न	निम्नतर	निम्नतम

लिखो–

1. (क) दो लीटर दूध – निश्चित परिमाणवाचक
   (ख) थोड़ी मिठाई – अनिश्चित परिमाणवाचक
   (ग) ढाई मीटर कपड़ा – निश्चित परिमाणवाचक
   (घ) कुछ फल – अनिश्चित परिमाणवाचक

2. (क) घर – सार्वनामिक (ख) कोई – सार्वनामिक
   (ग) कुछ – सर्वनाम (घ) कुछ – सर्वनाम

3.

मूलावस्था	**उत्तरावस्था**	**उत्तमावस्था**
गुरु	गुरुतर	गुरूतम
अधिक	अधिकतर	अधिकतम
निम्न	निम्नतर	निम्नतम
उच्च	उच्चतर	उच्चतम
तीव्र	तीव्रतर	तीव्रतम

4.

विशेषण	**भेद**
(क) सुंदर	गुणवाचक विशेषण
(ख) तीन केले	निश्चित संख्यावाचक
(ग) चार किलो चीनी	निश्चित परिमाणवाचक विशेषण
(घ) कोई	सार्वनामिक विशेषण

5. धर्म – धार्मिक		नगर	– नागरिक		भारत	– भारतीय	
पाप – पापी		अपमान	– अपमानित		दिन	– दैनिक	
लखनऊ – लखनवी		बहना	– बहाव				

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (ख) 2. (ग) 3. (ख) 4. (क)

पाठ-14 क्रिया

(Page No - 87)

बताओ–

1. जिन पदों (शब्दों) से किसी कार्य के होने या करने या स्थिति का बोध होता है, उन्हें क्रिया कहते हैं; जैसे– करना, चलना, रोना आदि।
2. कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद हैं– अकर्मक क्रिया, सकर्मक क्रिया
   अकर्मक का अर्थ है– जिसमें कर्म न हो।, वाक्य की जिस क्रिया के प्रयोग में कर्म की आवश्यकता नहीं होती, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। इस क्रिया पद से कार्य का करना या होना स्वत: ही पता चल जाता है तथा इसका प्रभाव सीधे कर्ता पर पड़ता है; जैसे– कृष्ण आता है।, पक्षी उड़ रहे हैं। उपर्युक्त वाक्यों में आना, उड़ना, हँसना, रोना- क्रियाओं को कर्म की अपेक्षा नहीं है। इनका प्रभाव क्रमश: कृष्ण और पक्षी पर पड रहा है। य` अकर्मक क्रियाएँ है। जबकि सकर्मक का अर्थ है – कर्म सहित। वाक्यों में जिस क्रिया के प्रयोग में कर्म की आवश्यकता होती है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे– राम पत्र लिखता है।, मोहन बाज़ार जाता है।
3. जिस क्रिया से यह पता चले कि कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी अन्य को प्रेरणा देकर कार्य कराता है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं; जैसे– मोहन नौकर से काम करवाता है।, माँ धोबी से कपड़े धुलवाती है।
4. किसी कार्य के करने या होने को क्रिया कहते है परंतु कही-कही वाक्य में वे क्रियाएँ साथ आ जाती हैं तब इनमें से पहली क्रिया को मुख्यक्रिया तथा जब क्रिया मुख्य क्रिया के साथ जुड़कर अर्थ में विशेषता लाने का कार्य करती है, तब वह सहायक क्रिया या रंजक क्रिया कहलाती है; जैसे– मदारी खेल दिखा रहा है।, रहा है– मुख्य क्रिया, दिखा– सहायक क्रिया

लिखो–

1. (क) असकर्मक क्रिया (ख) सकर्मक क्रिया (ग) असकर्मक क्रिया
   (घ) सकर्मक क्रिया (ङ) सकर्मक क्रिया
2. (क) जाऊगाँ (ख) लिखा (ग) चली गई (घ) भेजूगाँ
   (ङ) सुनाई
3. (क) मालिक ने माली से पौधों को पानी दिवाया।
   (ख) माता ने नौकरानी से बच्चों को सुलवाया।
   (ग) मैं धोबी से कपड़े धुलवाता हूँ।
   (घ) मज़दूर ने ठेकेदार से महान बनवाया।

4. (क)जा रही (ख) खा चुकी (ग) जा रही (घ) पढ़ चुका

5. बात – बतियाना लाज – लजना टक्कर – टक्कराना
फिल्म – फिल्माना शर्म – शर्माना

6. (क) घास खा रही है। (ख) पुस्तक पढ़ चुका है।
(ग) मुंबई चला गया। (घ) अखबार पढ़ रहे है।

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (क) 2. (ग) 3. (क) 4. (ख)

पाठ–13 काल

(Page No - 94)

बताओ–

1. क्रिया के जिस रूप से उनके करने या होने के समय का बोध हो, उसे काल कहते हैं। काल के मुख्य रूप से तीन भेद हैं– 1. वर्तमान काल 2. भूतकाल 3. भविष्यत् काल
2. भूतकाल के छः भेद हैं–
   सामान्य भूतकाल – क्रिया के जिस रूप से यह जाना जाए कि क्रिया भूतकार में सामान्य रूप से हो गई, पर समय का ठीक–ठीक बोध न हो, सामान्य भूतकाल कहलाता है; जैसे उसने खाना खाया।
   आसन्न भूतकाल – क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि काम भूतकार में आरंभ होकर अभी–अभी समाप्त हुआ है, आसन्न भू तकाल कहलाता है; जैसे – माताजी खाना बना चुकी हैं।
   अपूर्ण भूतकाल – क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि कार्य भूतकाल में शुरू हुआ था पर अभी पूरा नहीं हुआ है, उसे अपूर्ण भूतकाल कहते हैं; जैसे– रवि निबंध लिख रहा था।
   पूर्ण भूतकाल – क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि काम भूतकाल में समाप्त हो चुका था, पूर्ण भूतकाल कहलाता है; जैसे– वह खाना खा चुका था।
   संदिग्ध भूतकाल – क्रिया के जिस रूप से उसके भूतकाल में होने के बारे में संदेह हो वहाँ संदिग्ध भूतकाल होता है; जेसे– वह आया होगा।
   हेतुहेतुमद् भूतकाल – क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि क्रिया भूतकाल में होती, पर किसी कारणवश न हो सकी, हेतुहेतुमद् भूतकाल कहलाता है; जैसे– वह आया होगा।
3. भविष्यत् काल के दो भेद हैं–
   सामान्य भवष्यित् – क्रिया के जिस रूप से आने वाले समय में सामान्य रूप से कार्य होने या करने का बोध हो, उसे सामान्य भविष्यत् काल कहते हैं; जैसे– हम कल जाएँगे।
   संभाव्य भविष्यत् – क्रिया के जिस रूप से आने वाले समय में उसके होने की संभावना पाई जाए, वहाँ सामान्य भविष्यत् काल होता है; जैसे– शायद वह चला जाए।

4. वर्तमान काल के तीन भेद हैं–

सामान्य वर्तमान काल – क्रिया के जिस रूप से काम के वर्तमान समय में सामान्य रूप से होने का बोध हो, उसे सामान्य वर्तमान काल कहते हैं; जैसे– बच्चा दूध पीता है।

अपूर्ण वर्तमान काल – क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि काम वर्तमान काल में शुरू होकर अभी चल रहा है, समाप्त नहीं हुआ है, उसे अपूर्ण वर्तमान काल कहते हैं; नमन पढ़ रहा है।

संदिग्ध वर्तमान काल – क्रिया के जिस रूप से वर्तमान काल में क्रिया के होने के बारे में संदेह हो, उसे संदि्ग्ध वर्तमान काल कहते हैं; जैसे– गीता नृत्य करेगी।

4. क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया अभी कुछ समय पहले ही पूरी हुई है उसे आसन्न भूतकाल कहते हैं; जैसे– मैं अभी सोकर उठी हूँ।

5. भविष्यत् काल के दो भेद हैं–
   1. सामान्य भविष्यत् काल – क्रिया के जिस रूप से उसके भविष्य में सामान्य रूप से होने का पता चलता है, उसे सामान्य भविष्यत् काल कहते हैं; जैसे– हम परीक्षा देने जाएँगे।
   2. संभाव्य भविष्यत् काल – क्रिया के जिस रूप से उसके भविष्य में होने की संभावना का पता चले, उसे संभाव्य भविष्यत् काल कहते हैं; जैसे– शायद आज वर्षा होगी।

लिखो–

1. (क) अपूर्ण वर्तमानकाल (ख) आसन्न भूतकाल (ग) अपूर्ण वर्तमान काल (घ) सामान्य भविष्यत् काल (ङ) संभव्य भविष्यत काल (च) भूतकाल
2. मैं प्रतिदिन स्कूल जाता था। स्कूल में जाकर पढ़ता था। मेरी अध्यापिका मुझे पढ़ती थी। सब बच्चे मिलकर खेलते थे।

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (क) 2. (घ) 3. (क)

पाठ–16 वाच्य

(Page No - 94)

बताओ–

1. उस रूप रचना को वाच्य कहते हैं जिससे यह पता चले कि क्रिया को मूल रूप से चलाने वाला कर्ता है या कर्म अथवा भाव; जैसे– मोहन रोटी खाता है।
2. वाच्य के तीन भेद होते हैं– 1. कर्तृवाच्य 2. कर्मवाच्य 3. भाववाच्य
   1. कर्तृवाच्य का उदाहरण – मैं चल नहीं सकता।
   2. कर्मवाच्य का उदाहरण – रवि द्वारा पौधा लगाया जाता हैं।
   3. भाववाच्य का उदाहरण – मुझसे चला नहीं जाता।

लिखो–

1. (क) मेरे द्वारा मैदान में खेला जाता है।
   (ख) प्रधानमंत्री ने भवन का उद्घाटन किया।

(ग) शीला द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है।
(घ) मुझसे चला नहीं जाता।
(ङ) मोहन के द्वारा पतंग उड़ाई जाती है।

2. (क) कृर्तवाच्य (ख) भाववाच्च (ग) कृर्तवाच्य (घ) कृर्तवाच्य (ङ) कर्मवाच्य

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (क) 2. (ख) 3. (ग)

पाठ-17 अव्यय/अविकारी शब्द

(Page No - 101)

बताओ–

1. जिन शब्दों में लिंग, वचन, कारक के कारण विकार (परिवर्तन) नहीं आता, उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं।
2. अव्यय पाँच प्रकार के होते हैं–
   1. क्रिया-विशेषण के उदाहरण – सरिता तेज हँस रही थी।
   2. संबंधबोधक के उदाहरण – मैं घर से दूर पहुँच गया।
   3. समुच्चयबोधक के उदाहरण – सोहन और मोहन मित्र हैं।
   4. विस्मयादिबोधक के उदाहरण – वाह! वाह! क्या कहने।
   5. निपात के उदाहरण – राम ही कल जाएगा।
3. जो शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, वे क्रिया-विशेषण कहलाते हैं। जैसे– हम कल जाएँगे।

   क्रिया-विशेषण के चार भेद हैं–
   1. रीतिवाचक क्रिया-विशेषण के उदाहरण – घोड़ा धीरे-धीरे चलती है।
   2. स्थानवाचक क्रिया-विशेषण के उदाहरण – बच्चे दिन भर टी.वी. देखते हैं।
   3. कालवाचक क्रिया-विशेषण के उदाहरण – वह ऊपर बैठा है।
   4. परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण के उदाहरण – अधिक उपजाओ।

लिखो–

1. (क) रीतिवाचक क्रिया-विशेषण (ख) स्थानवाचक क्रिया-विशेषण
   (ग) कालवाचक क्रिया-विशेषण (घ) परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण
2. (क) कल (ख) और (ग) या (घ) भी (ङ) भी
3. (क) के पीछे (ख) के पास (ग) की तरफ (घ) के बाद (ङ) के ऊपर
4. (क) इसलिए (ख) या (ग) किंतु (घ) ताकि
3. ही – राम और श्याम दोनों ही अच्छा दौड़ते है।
   भी – मैं भी सिनेमा देख ने जाऊँगा।
   भर – तुम रात भर जाग कर क्या करते रहे।
   तक – तुम कल तक यह काम पूरा कर दो।

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (ग) 2. (ग) 3. (क) 4. (ख) 5. (ग)

पाठ-18 शब्द-भंडार

(Page No - 111)

बताओ–

1. जिन शब्दों के अर्थ में समानता हो उन्हें पर्यायवाची शब्द कहते हैं; जैसे– अग्नि – आग, पावक, अनल; आकाश – गगन, व्योम, आसमान
2. जिनका अर्थ देखने और सुन ने में एक-सा होता है परंतु वे समानार्थी नहीं होते, उनमें सुक्ष्म अंतर होता है। एकार्थ कि प्रतीत होने वाले शब्द कहलाते है। अस्त्र - शस्त्र; आधि - व्याधि आदि।
3. श्री राम जैसा प्रजापालक, लक्ष्मण जैसा भाई।

लिखो–

1. (क) मेघ – बादल, जलद, मेघराज (ख) पृथ्वी – भू, धरती, धरा
   (ग) हवा – वायु, पवन, समीर (घ) अग्नि – आग, पावक, अनल
   (ङ) कमल – पकज, नीरज, जलज
2. (क) लिखित (ख) नास्तिक (ग) निर्जन (घ) सरल
3. (क) कनक – सोना, धतूरा (ख) गुरु – भारी, शिक्षक
   (ग) अर्क – सूर्य, रस (घ) गति – चाल, रफ्तार
4. (क) अंश – हिस्सा अंस – कंघा
   (ख) अलि – भौंरा अली – सखी
5. (क) निराकर (ख) दुलर्भ (ग) वाचाल (घ) इतिहासकार

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (ग) 2. (ख) 3. (ख)

पाठ-19 पद-परिचय

(Page No - 115)

बताओ–

1. 'पर-परिचय' का अर्थ है- पद का परिचय अर्थात् वाक्य में प्रयुक्त शब्द का व्याकरण की दृष्टि से पूर्ण परिचय देना। जैसे– संज्ञा – संज्ञा का भेद, लिंग, वचन, कारक, क्रिया के साथ संबंध; सर्वनाम – सर्वनाम का भेद, पुरुष, लिंग, वचन, क्रिया के साथ संबंध आदि।
2. पद-परिचय देते समय पद का भेद, उपभेद, लिंग, वचन, कारक, काल आदि का परिचय देना आवश्यक है।

लिखो–

1. (क) प्रेमचंद्र प्रसिद्ध कथाकार थे।
   प्रेमचंद्र – संज्ञा; प्रसिद्ध – विशेषण; कथाकार – जातिवाचक; थे – भूतकालीन क्रिया

   (ख) मेरा भाई कल आएगा।
   मेरा – सर्वनाम; भाई – जातिवाचक; कल आएगा – भविष्यतकाल क्रिया

(ग) अरे! आप कब आए?

अरे! – विस्मयदिबोधक अव्यय; आप – सर्वनाम; कब आए – प्रश्नवाचक क्रिया

(घ) मैं पुस्तक पढ़ता हूँ।

मैं – सर्वनाम; पुस्तक – जातिवाचक; पढ़ता हूँ – वर्तमान काल

(ङ) आगरा में ताजमहल है।

आगरा – व्यक्तिवाचक संज्ञा; में संबंधबोधक अव्यय; ताजमहल है – जातिवाचक

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (ख) 2. (ग) 3. (ख)

पाठ-17 पदबंध

(Page No - 119)

बताओ–

1. कई पदों के योग से बने ये अंश ही पदबंध कहलाते हैं। सबसे तेज़ दौड़ने वाला छात्र बच गया।
2. पदबंध पाँच प्रकार के होते हैं–
   1. संज्ञा पदबंध के उदाहरण – राम ने लंका के दुष्ट राजा रावण को मार गिराया।, कोठी, के पीछै लगा पेड़ गिर गया।
   2. सर्वनाम पदबंध के उदाहरण – आपके मित्रों में से कोई वक्त पर नहीं पहुँचा।, दीन-दुखियों पर दया करने वाले आप महान हैं।
   3. विशेषण पदबंध के उदाहरण – लोहे की बड़ी अलमारी से कोट निकालो।, घर के कोने में बैठा आदमी जासूस है।
   4. क्रिया पदबंध के उदाहरण – मुझे मोहन छत से दिखाई दे रहा है।, नाव पानी में डूबती चली गई।
   5. क्रिया-विशेषण पदबंध के उदाहरण – कुछ लोग धीरे-धीरे बात करते हुए चले जा रहे थे, उसने साँप को पीट-पीटकर मारा।

लिखो–

1. (क) विशेषण पदबंध (ख) संज्ञा पदबंध
   (ग) सर्वनाम पदबंध (घ) विशेषण पदबंध
   (ङ) अव्यय पदबंध (च) क्रिया पदबंध
   (छ) क्रिया पदबंध (ज) सर्वनाम पदबंध
   (झ) विशेषण पदबंध (ञ) अव्यय पदबंध
2. (क) विशेषण पदबंध (ख) क्रिया पदबंध (ग) सर्वनाम पदबंध
   (घ) संज्ञा पदबंध (ङ) विशेषण पदबंध

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (ख) 2. (ग) 3. (क) 4. (ख)

पाठ-21 वाक्य-विचार

(Page No - 129)

बताओ–

1. वाक्य पदों का वह व्यवस्थित समूह है जिसमें पूर्ण अर्थ देने की शक्ति होती है। अर्थात् शब्दों के सार्थक मेल से बनने वाली इकाई वाक्य कहलाती है। जैसे– कृष्ण कुमार कहानी लिखता है।
2. वाक्य के प्रमुख गुण हैं– सार्थकता, योग्यता, आकांक्षा, निकटता, पदक्रम तथा अन्वय।
3. वाक्य के दो अंग होते हैं: 1. उद्देश्य 2. विधेय
   उद्देश्य वाक्य का वह अंग होता है, जिसके बारे में कुछ कहा जाता है। तथा उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाता है, वह विधेय होता है। जैसे – मेरा भाई बुद्धिमान है। इस वाक्य में मेरा भाई उद्देश्य है तथा बुद्धिमान है। विधेय है।
4. रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद हैं– 1. सरल वाक्य 2. संयुक्त वाक्य 3. मिश्र वाक्य
   1. सरल वाक्य के उदाहरण – राकेश स्कूल जाता है।
   2. संयुक्त वाक्य के उदाहरण – हम लोग मुंबई घूमने गए।
   3. मिश्र वाक्य के उदाहरण – गुरुजी ने कहा कि कल छुट्टी रहेगी।
5. अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद हैं–
   1. विधानवाचक वाक्य के उदाहरण – ठंडी-ठंडी हवा चल रही है।
   2. निषेधधवाचक(नकारात्मक) वाक्य के उदाहरण – वह नहीं आया।
   3. प्रश्नवाचक वाक्य के उदाहरण – आप क्या कर रहे हैं?
   4. आज्ञावाचक वाक्य के उदाहरण – अब आप जा सकते हैं।
   5. संदेहवाचक वाक्य के उदाहरण – शायद आज वर्षा हो।
   6. इच्छावाचक वाक्य के उदाहरण – आपकी यात्रा मंगलमय हो।
   7. संकेतवाचक वाक्य के उदाहरण – यदि वर्षा होती हो फसल अच्छी होती।
   8. विस्मयवाचक वााक्य के उदाहरण – अरे! तुम कब आए?

लिखो–

1.

	उद्देश्य	**विधेय**
(क)	मेरा मित्र श्याम	कल आ रहा है।
(ख)	सीता	कल आगरा जाएगी।
(ग)	हमारे कक्षाध्यापक श्री रमनलाल	गणित पढ़ाएँगे।
(घ)	लंका का राजा रावण	बहुत दुष्ट था।

2. (क) सरल वाक्य (ख) संयुक्त वाक्य (ग) मिश्र वाक्य (घ) संयुक्त वाक्य
3. (क) प्रश्नवाचक वाक्य (ख) निषेधात्मक वाक्य (ग) आज्ञासूचक वाक्य
   (घ) सदेहवाचक वाक्य (ङ) निजवाचक वाक्य (च) इच्छावाचक वाक्य
   (छ) विस्मयसूचक वाक्य (ज) संभावना सूचक वाक्य

4. (क) बालक ने गिलास तोड़ा और खड़ा हो गया।
   (ख) मुझे बाजार जाना हैं और किताब खरीदनी है।
   (ग) आप नहीं जा सकतें।
   (घ) वर्षा होने से बाढ़ आ गई।
5. (क) मैं पुस्तकें खरीदना चाहती हूँ।
   (ख) यहाँ गाय का शुद्ध दूध मिलता है।
   (ग) तुम अपने घर जाओ।
   (घ) सीता ने फल खाए और चाय दी।

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (घ) 2. (क) 3. (ख) 4. (क)

पाठ-22 विराम-चिह्न

(Page No - 135)

बताओ–

1. लिखित भाषा में स्थान विशेष पर रुकने अथवा उतार-चढ़ाव आदि दिखाने के लिए विभिन्न प्रकार के चिह्नों का सहारा लेना पड़ता है। ये चिह्न 'विराम-चिह्न' कहलाते हैं। जैसे– राम आगरा जाएगा।, राम आगरा जाएगा?, राम आगरा जाएगा! इन वाक्यों में । ? ! ये संकेत चिह्न ही वाक्य के अर्थ में अतंर दे रहे हैं, जबकि तीनों वाक्यों की रूप-संरचना एक समान है। विराम-चिह्न का प्रयोग वाक्य पर बल देने के लिए व रुकते के लिए किया जाता हैं। उससे भाषा सहज और ग्राह्य बनती हैं।
2. पूर्ण विराम से कम देर रुकने के लिए अर्ध विराम चिह्न का प्रयोग किया जाता है। इसका प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में किया जाता है- जैसे- वाक्य में उदाहरण सूचक 'जैसे' शब्द से पहले- स्त्रियों के नाम के साथ प्राय: देवी लगता है; जैसे– सरला देवी'।
   अल्प विराम का प्रयोग कम समय तक रुकने के लिए वाक्य के मध्य में होता है। इसका प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में होता है– समान पदों/पदबंधों में अलगाव दिखाने के लिए; जैसे– वहाँ बच्च, बूढ़े, स्त्री, पुरुष सभी आए।

लिखो–

1. (क) हरीश ने कहा- रमेश; संघष ही जीवन है। तू हार जीत से क्यों घबराता है?
   (ख) है! राष्ट्रभक्तों! मृत्यु का भय मिथ्या है, कर्त्तव्य में प्रसाद करना पाप है।
   (ग) गीता ने पूछा, 'क्या हाल है मोहन; राधा और सौम्या का।'
   (घ) अरे! मोहन तुम कब आए?
   (ङ) वाह! तुमने तो कमाल कर दिया।
2. (क) पूर्ण विराम – कमल स्कूल जाता है।
   (ख) अर्ध विराम – काम करते रहना ही जीवन है; आलस्य तो रोग है।
   (ग) अल्प विराम – सारिका, प्रीति और ज्योति पार्क में खेलने गई।
   (घ) प्रश्नसूचक – तुमने माँ को खाना दिया?
   (ङ) विस्मयादिबोधक – हे राम! क्या होगा इस लड़की का।

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (क) 2. (घ) 3. (ख)

पाठ–23 अलंकार

(Page No - 139)

बताओ–

1. अनुप्रास अलंकार	2. रूपक और मानवीकरण	3. रूपक अलंकार
4. उपमा अलंकार	5. अनुप्रास अलंकार	6. यमक अलंकार
7. अनुप्रास अलंकार	8. अनुप्रास अलंकार, उपमा अलंकार	9. रूपक अलंकार

पाठ–24 मुहावरे और लोकोक्तियाँ

(Page No - 148)

लिखो–

1. (क) आकाश से तारे तोड़ना – कोई मुसकील काम कर दिखाना – हमने तो कुछ नहीं किया पर आप कौन सा आकाश से तारे तोड़ लाए।
   (ख) ईद का चाँद होना – बहुत कम दिखाई देना – तुम तो आजकल ईद का चाँद हो गए हो।
   (ग) आकाया–पाताल एक करना – बहुत प्रयतन करना – इस नौकरी को पाने के लिए मैंने आकाश पाताल एक कर दिया।
   (घ) कोल्हू का बैल होना – सारा दिन परिश्रम करने वाला – तुम तो सारा दिन कोल्हू का बैल बनकर काम करते हो, फिर भी डाँट खाते हो।
   (ङ) तिल का ताड़ बनाना – छोटी सी बात का बहुत तूल देना – तुम तो ति का ताड़ बनाने की कला में माहिर हो।
2. (क) मैंने सारा दिन डटकर काम किया और शाम को मिले केवल पचास रुपए। यह तो वही बात हुई कि खोदा पहाड़ निकली चुहिया।
   (ख) कुछ चीज़े दूस से अच्छी लगती हैं जबकि उनकी असलियत कुछ और ही होती हैं तभी तो दादाजी कहते हैं कि दूर के ढोल सुहावने लगते है।
   (ग) तुम दिल्ली कभी गए नहीं आ ज़ैर कह रहे हो छोटा शहर है, वही बात हुई बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद।
   (घ) हीना को खत लिखनाा बेकार हैं क्योंकि उसके लिए तो काला अक्षार भौंस बराबर है।
   (ङ) ना तो पिताजी लैपटोप लाके देगे और न ही ये अपनी परीक्षा की तैयारी करेगा ये तो वही बात हो गई न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी।
3. (क) फूला न समाना (ख) नाक में दम करना (ग) छक्के छुड़ाना
   (घ) जी चुराना (ङ) उल्टी गंगा बहना
4. घोड़े बेचकर सो रहे थे। (घोड़े बेचकर सोना), करवटें बदल रहा था (करवटे बदलना), तारे गिनते–गिनते (तारे गिनना), नौ दो ग्यारह हो गए। (नौ–दो ग्यारह होना)

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (क) 2. (ख) 3. (ख) 4. (क)

पाठ–25 अपठित बोध

(Page No - 154)

गद्यांश 1	1. (घ)	2. (घ)	3. (घ)	4. (क)	5. (ग)
गद्यांश 2	1. (ग)	2. (ग)	3. (ख)	4. (ग)	5. (ख)
काव्यांश 1	1. (घ)	2. (क)	3. (ख)	4. (ख)	5. (क)
काव्यांश 2	1. (ख)	2. (ग)	3. (क)	4. (ग)	5. (क)

पाठ–26 और 27 स्वयं करें।